घटती घटना

सत्य के साथ...जनहित में बात...

www.ghatatighatana.com **अम्बिकापुर,वर्ष 22, अंक - 259- सोमवार 20- जुलाई 2026,पृष्ठ - 8 मूल्य 2 रूपये** RNI Reg.No.- CHHHIN/2004/15050,डाक पंजीयन. क्रं. 13/Surguja DN/ 2026-2028

मानसून सत्र से पहले सर्वदलीय बैठक में हंगामा : टीएमसी के 20 बागी सांसदों को बुलाने के विरोध में विपक्ष का सांकेतिक वॉकआउट

नई दिल्ली,19 जुलाई 2026। संसद के मानसून सत्र से एक दिन पहले रविवार को संसद भवन की एनेक्सी बिल्डिंग में सर्वदलीय बैठक आयोजित हुई। करीब तीन घंटे चली बैठक की अध्यक्षता रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने की। इसमें कांग्रेस, समाजवादी पार्टी,तृणमूल कांग्रेस, डीएमके सहित करीब 40 राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया। बैठक के दौरान तृणमूल कांग्रेस से अलग हुए 20 सांसदों के समूह को आमंत्रित किए जाने पर विवाद खड़ा हो गया। कांग्रेस समेत कई विपक्षी दलों ने इसका विरोध करते हुए बैठक से सांकेतिक वॉकआउट किया।

बागी सांसदों को बुलाने पर विपक्ष ने जताई आपत्ति : विपक्षी दलों का कहना था कि तृणमूल कांग्रेस के 20 बागी सांसदों के समूह को लोकसभा अध्यक्ष की ओर से अभी अलग राजनीतिक दल के रूप में औपचारिक मान्यता नहीं दी गई है। ऐसे में उन्हें सर्वदलीय बैठक में अलग समूह के रूप में आमंत्रित करना उचित नहीं था। विपक्ष ने सवाल उठाया कि जब इन सांसदों की सदस्यता और दलगत स्थिति से जुड़ा मामला लोकसभा अध्यक्ष के विचाराधीन है,तब सरकार ने उन्हें किस आधार पर बैठक में बुलाया।

महुआ मोइत्रा ने दी वॉकआउट की जानकारी

तृणमूल कांग्रेस सांसद महुआ मोइत्रा ने कहा कि कांग्रेस,समाजवादी पार्टी, डीएमके, झारखंड मुक्ति मोर्चा,आम आदमी पार्टी,नेशनल कॉन्फ्रेंस,वाम दलों और शिवसेना उद्धव गुट सहित विपक्षी दलों ने इस मुद्दे पर बैठक से वॉकआउट किया। उन्होंने दावा किया कि लोकसभा के रिकॉर्ड में तृणमूल कांग्रेस के सांसदों की संख्या अभी भी 28 दिखाई जा रही है। वहीं,नेशनलिस्ट सिटीजन्स पार्टी ऑफ इंडिया नामक समूह के 20 सांसदों के कथित विलय को स्पीकर की अंतिम मंजूरी नहीं मिली है और उनकी अयोग्यता से जुड़ी याचिकाएं लंबित हैं।

अलग बैठने की अनुमति और मान्यता पर विवाद

एक दिन पहले तृणमूल कांग्रेस से अलग हुए 20 सांसदों को लोकसभा में अलग बैठने की अनुमति दिए जाने की खबर सामने आई थी। बताया गया कि इन सांसदों ने 15 जून को नेशनलिस्ट सिटीजन्स पार्टी ऑफ इंडिया में विलय का दावा किया था। हालांकि,विपक्ष का कहना है कि अलग बैठक व्यवस्था देना और किसी समूह को औपचारिक राजनीतिक दल के रूप में मान्यता देना दो अलग प्रक्रियाएं हैं। इसीलिए बागी सांसदों की संवैधानिक और संसदीय स्थिति को लेकर विवाद बना हुआ है।

91 वें संविधान संशोधन का दिया हवाला

महुआ मोइत्रा ने कहा कि 91 वें संविधान संशोधन के बाद किसी दल से अलग होकर स्वतंत्र गुट बनाने की व्यवस्था समाप्त हो चुकी है। उन्होंने पूछा कि ऐसी स्थिति में बागी सांसदों को अलग समूह के रूप में आमंत्रित करने का आधार क्या था। विपक्ष ने आरोप लगाया कि सरकार ने इस समूह को बैठक में बुलाकर लंबित संसदीय और कानूनी प्रक्रिया को प्रभावित करने का प्रयास किया है।

रिजिजू बोले...सदन सभी सांसदों का...

संसदीय कार्य मंत्री किरण रिजिजू ने विपक्ष की आपत्तियों को खारिज करते हुए कहा कि संसद सभी निर्वाचित सदस्यों की है और सरकार का दायित्व सभी समूहों से संवाद करना है। उन्होंने कहा कि 20 सांसदों ने लोकसभा अध्यक्ष को हस्ताक्षरित आवेदन देकर नए दल के रूप में मान्यता और अलग बैठक व्यवस्था की मांग की है। मामला स्पीकर के विचाराधीन है, लेकिन सांसदों का समूह अस्तित्व में है,इसलिए उन्हें सर्वदलीय बैठक में आमंत्रित किया गया। रिजिजू ने कहा कि सदन को सुचारु रूप से चलाना सत्ता पक्ष और विपक्ष दोनों की जिम्मेदारी है। बैठक में सभी दलों ने अपने मुद्दे रखे और सरकार सकारात्मक चर्चा के लिए तैयार है।

उद्धव गुट के छह सांसदों का मामला भी चर्चा में : लोकसभा अध्यक्ष द्वारा उद्धव ठाकरे गुट से अलग हुए छह सांसदों को शिंदे गुट के साथ बैठने की अनुमति दिए जाने का मामला भी राजनीतिक चर्चा में है। बताया गया कि ये सांसद 22 जून को उद्धव गुट छोड़कर शिंदे के नेतृत्व वाली शिवसेना में शामिल हुए थे। अब उनकी बैठक व्यवस्था शिंदे गुट के सांसदों के साथ की गई है। बैठक के बाद किरण रिजिजू ने कहा कि मानसून सत्र में विधायी कामकाज और जनहित के मुद्दों पर सार्थक चर्चा होनी चाहिए। उन्होंने विपक्षी दलों से सदन की कार्यवाही बाधित नहीं करने और बहस में सहयोग की अपील की। वहीं विपक्ष ने स्पष्ट किया है कि वह पेपर लीक, बेरोजगारी,महंगाई, विदेश नीति और लोकतांत्रिक संस्थाओं से जुड़े मुद्दों को संसद में प्रमुखता से उठाएगा।

पुंछ में भारी बारिश से तबाही.. 11 लोगों की मौत,चंबा में पहाड़ खिसकने से मुख्य मार्ग बंद

नई दिल्ली,19 जुलाई 2026। जम्मू-कश्मीर के पुंछ जिले में पिछले दो दिनों से जारी मूसलाधार बारिश, अचानक आई बाढ़ और भूस्खलन के कारण भारी तबाही हुई है,जिसमें अब तक 11 लोगों की मौत हो चुकी है। सुरनकोट और हवेली क्षेत्रों में आई इस प्राकृतिक आपदा के कारण कई लोग अब भी लापता हैं। स्थानीय प्रशासन और राहत टीमों ने प्रभावित इलाकों में बड़े पैमाने पर बचाव अभियान शुरू कर दिया है। सरकार का मुख्य ध्यान फंसे हुए लोगों को सुरक्षित बाहर निकालने और लापता नागरिकों की तलाश करने पर है। सरकार इस आपदा में सबसे ज्यादा नुकसान सुरनकोट इलाके में हुआ है,जहां एक ही परिवार के छह सदस्यों समेत नौ लोगों की मौत हो गई। वहीं हवेली क्षेत्र में भी एक व्यक्ति की जान चली गई है और कम से कम सात मकान पूरी तरह मलबे में तब्दील हो गए हैं। पुंछ में 77 मिलीमीटर से ज्यादा बारिश दर्ज की गई है, जिससे निचले रिहायशी इलाकों में पानी भर गया है। लापता लोगों को ढूंढने के लिए एसडीआरएफ और एनडीआरएफ की टीमें हेलिकॉप्टर और विशेष नावों की मदद ले रही हैं। जम्मू-कश्मीर के साथ-साथ पड़ोसी राज्य हिमाचल प्रदेश के चंबा जिले में भी हालात लगातार बिगड़ रहे हैं। चंबा के भटियात क्षेत्र में लाहडू-सिंहुता मुख्य मार्ग पर भारी भूस्खलन के कारण पूरा पहाड़ अचानक सड़क पर आ गिरा।

पेपर लीक के विरोध में आज संसद मार्च करेगा सीजेपी

अभिजीत दीपके ने समर्थकों से की शांतिपूर्ण प्रदर्शन की अपील

नई दिल्ली,19 जुलाई 2026। परीक्षा प्रश्नपत्र लीक के मामलों को लेकर केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान के इस्तीफे की मांग पर आंदोलन कर रही कॉकरोच जनता पार्टी (सीजेपी) ने 20 जुलाई को जंतर-मंतर से संसद तक मार्च निकालने की घोषणा की है। पार्टी प्रमुख अभिजीत दीपके ने प्रस्तावित मार्च में बड़ी संख्या में शामिल होने के लिए समर्थकों से जंतर-मंतर पहुंचने की अपील करते हुए आंदोलन को पूरी तरह शांतिपूर्ण बनाए रखने का आह्वान किया है। दीपके ने रविवार को सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर जारी संदेश में कहा कि सभी समर्थक लोकतांत्रिक तरीके से अपनी आवाज उठाएं और किसी भी प्रकार की अव्यवस्था या उकसावे से दूर रहें। उन्होंने कहा कि पार्टी का विरोध प्रदर्शन और

संसद मार्च पूरी तरह शांतिपूर्ण रहेगा। उन्होंने कहा, 'मैं सभी समर्थकों से जंतर-मंतर पहुंचने की अपील करता हूं। हमारा विरोध प्रदर्शन और मार्च पूरी तरह शांतिपूर्ण रहेगा। यदि कोई व्यक्ति किसी प्रकार की गड़बड़ी करता है या नकारात्मक नारेबाजी करता है, तो वह न तो सोनम सर (सोनम वांगचुक) का समर्थक है और न ही सीजेपी का। ' गौरतलब है कि

अस्पताल से देश के नाम सोनम वांगचुक का संदेश,कहा...आज आजादी का दूसरा आंदोलन चलिए...'

पर्यावरण कार्यकर्ता सोनम वांगचुक, जिन्हें दिल्ली पुलिस ने शनिवार को उनके प्रदर्शन स्थल से हिरासत में ले लिया था, इस समय सफदरजंग अस्पताल में भर्ती हैं। अपनी भूख हड़ताल और आज प्रस्तावित 'संसद मार्च' के संदर्भ में वांगचुक ने अपनी पत्नी गीतांजलि जे आंगमो के माध्यम से देशवासियों के लिए एक भावनात्मक और प्रेरणादायक संदेश साझा किया है। उन्होंने अपने सोशल मीडिया पोस्ट में इस आंदोलन को 'आजादी का दूसरा आंदोलन' करार दिया है। उन्होंने स्पष्ट किया कि यह संघर्ष भय मुक्त और अन्याय मुक्त भारत के निर्माण के लिए है। वांगचुक ने अपने संदेश में पेपर लीक जैसी समस्याओं को 'अन्याय से आजादी' और अपनी हिरासत को 'डर से आजादी' के रूप में परिभाषित करते हुए नागरिकों से इस संसद मार्च को बड़ी कामयाबी दिलाने का आग्रह किया है।

दिल्ली हाई कोर्ट बोला...वांगचुक को इलाज के लिए उठाना गलत नहीं...

सरकार और पुलिस से 3 दिन में मांगा जवाब,अंतरिम राहत देने से किया इनकार,गुरुवार को अगली सुनवाई होगी...

पर्यावरणविद् सोनम वांगचुक को जंतर-मंतर से उपचार के लिए अस्पताल ले जाने के मामले में दिल्ली हाईकोर्ट ने केंद्र सरकार और दिल्ली पुलिस से तीन दिन के भीतर जवाब मांगा है। अदालत ने फिलहाल कोई अंतरिम आदेश जारी करने से इनकार करते हुए मामले की अगली सुनवाई गुरुवार को तय की है। सुनवाई के दौरान हाईकोर्ट ने प्रारंभिक तौर पर कहा कि यदि किसी व्यक्ति की तबीयत गंभीर हो और उसे इलाज के लिए अस्पताल ले जाया जाए, तो इसे प्रथम दृष्टया गलत नहीं कहा जा सकता। हालांकि अदालत ने मामले के सभी तथ्यों पर केंद्र और दिल्ली पुलिस से विस्तृत जवाब मांगा है। गौरतलब है कि सोनम वांगचुक जंतर-मंतर पर परीक्षा पेपर लीक समेत विभिन्न मांगों को लेकर अनशन पर बैठे थे। उनकी तबीयत बिगड़ने के बाद पुलिस उन्हें उपचार के लिए अस्पताल ले गई थी।

मौसम ने रोकी आस्था की राह,वैष्णो देवी और अमरनाथ यात्रा अस्थायी रूप से स्थगित

नई दिल्ली,19 जुलाई 2026। उत्तर भारत में मानसून की मूसलाधार बारिश ने इस समय अपना विकराल रूप धारण कर लिया है। खराब मौसम और लगातार हो रही वर्षा के कारण जम्मू-कश्मीर की दो सबसे प्रमुख धार्मिक यात्राओं–माता वैष्णो देवी और अमरनाथ यात्रा–को अस्थायी रूप से स्थगित कर दिया गया है। भारत मौसम विज्ञान विभाग द्वारा जारी की गई भारी बारिश और संभावित भूस्खलन की चेतावनियों को देखते हुए प्रशासन ने यह कठिन लेकिन अनिवार्य फैसला लिया है। अधिकारियों का स्पष्ट कहना है कि श्रद्धालुओं की सुरक्षा सर्वोपरि है और किसी भी प्रकार का जोखिम नहीं लिया जा सकता। प्रशासन पूरी स्थिति पर पैनी नजर बनाए हुए है और मौसम में सुधार होते ही यात्रा को पुनः सुचारू रूप से संचालित किया जाएगा। श्री माता वैष्णो देवी श्राइन बोर्ड ने एक आधिकारिक सूचना जारी कर श्रद्धालुओं को सूचित किया है कि खराब मौसम के अलर्ट के चलते यात्रा पर फिलहाल रोक लगा दी गई है। जो श्रद्धालु पहले ही कटरा पहुंच चुके हैं, उन्हें आगे बढ़ने से रोक दिया गया है और उन्हें सुरक्षित स्थानों पर ठहरने का निर्देश दिया गया है। श्राइन बोर्ड के अधिकारियों ने तीर्थयात्रियों से धैर्य बनाए रखने

की अपील की है। उन्होंने स्पष्ट किया है कि यात्रियों को केवल श्राइन बोर्ड द्वारा जारी आधिकारिक सूचनाओं पर ही विश्वास करना चाहिए। सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किए गए हैं ताकि किसी भी प्रकार की आपातकालीन स्थिति में तुरंत सहायता उपलब्ध कराई जा सके। वैष्णो देवी के साथ-साथ अमरनाथ यात्रा को भी एहतियात के तौर पर 19 जुलाई से अस्थायी रूप से निलंबित कर दिया गया है। मौसम विभाग ने पहलगाम और बालटाल दोनों ही मुख्य मार्गों के लिए भारी बारिश और भूस्खलन का गंभीर पूर्वानुमान जारी किया है। इन दुर्गम रास्तों पर प्राकृतिक आपदा की आशंका को देखते हुए प्रशासन ने जोखिम उठाना उचित नहीं समझा।

पूछताछ में बड़ा खुलासा...टिन्नू के इशारे पर नोट छिपाता था मनीष

नई दिल्ली,19 जुलाई 2026। श्रीराम जन्मभूमि मंदिर के चढ़ावे में चोरी के मामले में पुलिस जांच जैसे-जैसे आगे बढ़ रही है, अपराध की परतें खुलती जा रही हैं। पुलिस ने आरोपियों को रिमांड पर लेकर जब सघन पूछताछ की,तो एक बेहद शातिर 'मॉडस ऑपरेंडी' (अपराध करने का तरीका) का पता चला है। बीते शनिवार को टिन्नू यादव और उसके भतीजे मनीष को 39 घंटे की पुलिस रिमांड पर लिया गया था। जांच में यह बात सामने आई है कि मंदिर में चढ़ावे की गिनती के दौरान चोरी की इस पूरी साजिश को बेहद सुनियोजित तरीके से अंजाम दिया जाता था। आरोपियों की प्रत्येक भूमिका पहले से निर्धारित थी, जिससे वे सुरक्षा घेरे को चकमा देने में सफल रहते थे। पूछताछ में आरोपियों ने कबूल किया कि वे मंदिर में गिनती वाले कक्ष के पास स्थित एक बाथरूम का उपयोग धन छिपाने के लिए करते थे। टिन्नू यादव के पास मंदिर प्रबंधन या चेकिंग टीम के आने की सूचना पहले ही पहुँच जाती थी। जैसे ही किसी के आने की आहट मिलती, टिन्नू अपने भतीजे मनीष को तुरंत संकेत दे देता था। मनीष फुर्ती से नोटों की गड्डियों को छिपाकर बाथरूम में डाल देता था। जैसे ही सुरक्षा टीम या प्रबंधन के लोग वहां से चले जाते, आरोपी वापस जाकर उन रुपयों को निकाल लेते थे। सीसीटीवी कैमरों की निगरानी से बचने के लिए भी उन्होंने बाकायदा एक रणनीति तैयार की थी, ताकि उनकी हर हरकत संदिग्ध न लगे।

भाषा किसी भी देश की संस्कृति व विरासत की पहचान होती : अमित शाह

कोलकाता,19 जुलाई 2026। सांस्कृतिक राजधानी कोलकाता के नाम आज एक और ऐतिहासिक उपलब्धि दर्ज हो गई। केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह ने कोलकाता स्थित ऐतिहासिक राष्ट्रीय पुस्तकालय परिसर में भारत के पहले 'शब्द संग्रहालय' का भव्य उद्घाटन किया। इस दौरान अमित शाह ने कहा कि किसी भी देश की भाषा उसकी संस्कृति, इतिहास और विरासत की पहचान होती है। उन्होंने कहा कि भाषा के माध्यम से किसी राष्ट्र की सभ्यता और उसके जीवन मूल्यों को समझा जा सकता है। उन्होंने विद्यार्थियों से अपनी मातृभाषा के साथ कम से कम एक अन्य भारतीय भाषा सीखने का आह्वान करते हुए कहा कि इससे भारत की सांस्कृतिक विविधता को बेहतर ढंग से समझने का अवसर मिलेगा। उन्होंने पुस्तकालयों की महत्ता पर बल देते हुए कहा कि किसी राष्ट्र का भविष्य केवल महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों में पढने वाले विद्यार्थियों की संख्या से तय नहीं होता, बल्कि इस बात से भी तय होता है कि कितने लोग पुस्तकालयों का उपयोग कर ज्ञान अर्जित करते हैं। पढने की संस्कृति ही समाज को वैचारिक रूप से समृद्ध बनाती है।

॥ वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभ ॥ निर्विघ्न कुरु मे देव, सर्वकार्येषु सर्वदा ॥

स्नेही स्वजन,

जगत जननी माँ महामाया की असीम अनुकम्पा एवं पूर्वजों की असीम कृपा से हमारे नवीन प्रष्ठिान

अम्बिका SONOGRAPHY
Diagnostic and Intervention Clinic

का भव्य शुभारंभ

होने जा रहा है,

जिसमें आपकी उपस्थिति ईष्टमित्रों सहित सादर प्रार्थनीय है।

सरगुजा के प्रथम सीटी स्कैन मशीन
जो बिना तार डाले हार्ट ब्लॉकेज की जाँच मात्र 1 मिनट में

अध्यक्षता
मा. श्री रामविचार नेताम जी
कैबिनेट मंत्री, छ.ग. शासन

मुख्य अतिथि
मा. श्री श्याम बिहारी जायसवाल जी
मंत्री, लोक स्वास्थ्य और परिवार कल्याण, पिछड़ा वर्ग एवं अल्पसंख्यक विकास, 20 सूत्रीय कार्यान्वयन, छ.ग. शासन

विशिष्ट अतिथि
मा. श्री राजेश अग्रवाल जी
मंत्री, पर्यटन, संस्कृति, धार्मिक न्यास एवं धर्मस्व, छ.ग. शासन

अतिविशिष्ट अतिथि
मा. श्री चिन्तामणि महाराज जी
सांसद सरगुजा छ.ग.

अतिविशिष्ट अतिथि
मा. श्री टी.एस. सिंह देव जी
पूर्व उपमुख्यमंत्री एवं पूर्व स्वास्थ्य मंत्री छ.ग. शासन

अतिविशिष्ट अतिथि
मा. श्री अमरजीत भगत जी
पूर्व मंत्री - छ.ग. शासन

20 जुलाई 2026, सोमवार
प्रातः 11:00 बजे

CMO कार्यालय के पास,
दर्रीपारा, अंबिकापुर (छ.ग.)

प्रतिक्षारत
श्री अरूण कुमार
श्री श्यामलाल जायसवाल

हमारी अत्याधुनिक मशीनें

रेडियोलॉजिस्ट
डॉ. तुषार आनंद
डी.एम.आर.डी, डी.एन.वी. सर गंगाराम अस्पताल नई दिल्ली, गोल्ड मेडलिस्ट

एनेस्थेटिस
डॉ. अनीशा जायसवाल
एम.डी

संस्थापक
श्री शिवलाल जायसवाल

संचालक
श्री परमानंद तिवारी

अम्बिका SONOGRAPHY
Diagnostic and Intervention Clinic
सी.एम.ओ. ऑफिस के पास
दर्रीपारा, अम्बिकापुर (छ.ग.)
+91 9288287771
+91 9288287772

संपादकीय

जरूरी है घुसपैठियों के प्रति सख्ती...

केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह एक लंबे समय से घुसपैठियों के खिलाफ सख्त रवैया अपनाए हुए हैं। वे उनकी पहचान करने और उन्हें देश से बाहर निकालने की बातें लगातार करते चले आ रहे हैं। समय-समय पर प्रधानमंत्री भी घुसपैठ का उल्लेख करते रहे हैं। गृह मंत्री और प्रधानमंत्री की ओर से घुसपैठियों के खिलाफ दिए गए बयानों को लेकर विपक्षी दलों की ओर से अक्सर यह कहा जाता रहा है कि वे सीमांत राज्यों और खासकर बंगाल में चुनावी लाभ के लिए घुसपैठ का मुद्दा उठाते हैं,लेकिन अब वहां चुनाव हो गए,तब भी यदि वे घुसपैठियों के खिलाफ अपना अभियान छेड़े हुए हैं तो इसका यही अर्थ है कि वे इसे लेकर गंभीर हैं और इस समस्या का समाधान होते हुए देखना चाहते हैं।

इसकी पुष्टि इससे होती है कि प्रधानमंत्री ने सीमावर्ती क्षेत्रों में जनसांख्यिकी में बदलाव के दुष्प्रभावों का पता लगाने के लिए एक समिति गठित की है। इस समिति के साथ गृह मंत्री दो बार बैठक कर चुके हैं। इसके अतिरिक्त वे बंगाल, पूर्वोत्तर और साथ ही अन्य सीमावर्ती राज्यों में घुसपैठ पर लगाम लगाने के उपायों की समीक्षा कर रहे हैं। इसी क्रम में बंगाल में बांग्लादेश से लगती सीमा पर बाड़ लगाने का काम तेज हो गया है।

घुसपैठियों पर लगाम लगाने की सक्रियता के बीच पिछले दिनों यह खबर आई कि प्रवर्तन निदेशालय अर्थात ईडी ने रोहिंग्या और बांग्लादेशी घुसपैठियों को अवैध तरीके से देश में लाकर बसाने में लिप्त एक ऐसे नेटवर्क के कई ठिकानों पर छापेमारी की, जो ट्रस्ट,एनजीओ आदि के जरिये विदेश से चंदा लेता था। यह नेटवर्क कितना व्यापक है,इसका अनुमान इससे लगाया जा सकता है कि ईडी ने बंगाल,उत्तर प्रदेश,दिल्ली,महाराष्ट्र और हरियाणा में कई स्थानों पर छापेमारी की।

उसे बंगाल के एक मदरसे से 40 लाख रुपये और कुछ सोने के सिक्के मिले। इस नेटवर्क के बारे में सुराग तब मिला था,जब उत्तर प्रदेश पुलिस के आतंकवाद विरोधी दस्ते अर्थात एटीएस ने करीब दो वर्ष पहले यह पता लगाया था कि एक नेटवर्क म्यांमार के रोहिंग्या और बांग्लादेशी घुसपैठियों को फर्जी दस्तावेजों से लैस कर और उन्हें आर्थिक सहायता देकर देश के विभिन्न हिस्सों में बसाने में लगा हुआ है। इस नेटवर्क का संबंध आतंकी संगठनों से जुड़े होने के भी संकेत मिले थे। यूपी एटीएस की इस जांच के आधार पर ही ईडी ने अपनी कार्रवाई आगे बढ़ाई और यह पाया कि घुसपैठियों के मददगार नेटवर्क की ओर से विदेशी अनुदान विनियमन अधिनियम अर्थात एफसीआरए के नियमों का उल्लंघन किया जा रहा था।

पूर्वोत्तर और बंगाल में तो न जाने कब से घुसपैठ हो रही है। पिछले कुछ वर्षों से म्यांमार के रोहिंग्या मुसलमान भी भारत में घुसपैठ करने में लगे हुए हैं। उनके मददगार कितने प्रभावशाली हैं,यह इससे समझा जा सकता है कि घुसपैठिए बंगाल से हजारों किलोमीटर दूर जम्मू,हैदराबाद तक जा बसे हैं। बांग्लादेशी घुसपैठियों ने तो करीब-करीब देश के हर राज्य में अपने ठिकाने बना लिए हैं। उन्होंने आजीविका के साधन जुटाने के साथ ही राशन कार्ड,आधार तक हासिल कर लिए हैं। कई मामले ऐसे आए हैं, जिनसे यह पता चला कि वे मतदाता भी बन गए हैं।

वास्तव में इसी कारण चुनाव आयोग को बंगाल में मतदाता सूचियों के विशेष गहन पुनरीक्षण यानी एसआइआर के दौरान अनेक लोगों के नाम वोटर लिस्ट से इस संदेह के चलते हटाने पड़े कि वे भारत के नागरिक नहीं हैं। बंगाल में बांग्लादेशी घुसपैठियों के प्रति एक लंबे समय से बहुत उदारता का परिचय दिया जा रहा है। पहले कांग्रेस और वाम मोर्चा सरकारों ने घुसपैठ की अनदेखी की। इसके बाद यही काम ममता बनर्जी करने लगीं। कहना कठिन है कि बंगाल, असम और पूर्वोत्तर के अन्य राज्यों में कितने घुसपैठिए भारतीय नागरिक के रूप में रह रहे हैं,लेकिन सभी इससे परिचित हैं कि बंगाल में एसआइआर के दौरान एक बड़ी संख्या में बांग्लादेशी अपने देश लौटने के लिए कतार लगाए हुए थे। घुसपैठियों को बाहर निकाला ही जाना चाहिए, क्योंकि वे न केवल देश के संसाधनों पर बोझ हैं,बल्कि राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए खतरा भी हैं। भारत एक विकासशील देश जरूर है,पर यहां अत्यधिक गरीबी भी है। केंद्र और राज्य सरकारें निर्धनता उन्मूलन के लिए जो अनेक योजनाएं चला रही हैं,उनका लाभ उठाने का अधिकार देश के गरीब लोगों को है, न कि घुसपैठियों को भी। समस्या यह है कि विपक्षी दल घुसपैठियों को एक वोट बैंक के रूप में देखते हैं। वोटों के लोभ में वे राष्ट्रीय सुरक्षा की अनदेखी ही करते हैं।

विपक्षी दल चुनाव आयोग की एसआइआर प्रक्रिया का विरोध इसीलिए कर रहे हैं कि कहीं घुसपैठियों की पहचान न हो जाए। चूंकि घुसपैठिए बड़ी संख्या में मुस्लिम हैं,इसलिए मुस्लिम तुष्टीकरण की भी राजनीति की जा रही है। एसआइआर एक जटिल प्रक्रिया है। चुनाव आयोग के लिए इस प्रक्रिया को बिना किसी गड़बड़ी के पूरा करना कठिन है, लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि इस प्रक्रिया को होने ही न दिया जाए। इसकी अनदेखी नहीं की जानी चाहिए कि पूर्वोत्तर के राज्यों में घुसपैठिए वैसे ही समस्या बन गए हैं, जैसे बंगाल में बने हुए हैं।

वैसे तो विश्व के अनेक अमीर देशों में गरीब देशों से अवैध तरीके से बसने वाले लोगों को राजनीतिक संरक्षण प्राप्त होता है,लेकिन वहां की स्थिति अलग है। इन देशों में मानव संसाधन की कमी देखी जा रही है। भारत में ऐसा नहीं है। भारत घुसपैठियों के प्रति उदारता का परिचय नहीं दे सकता,क्योंकि वे देश के सीमित संसाधनों का लाभ उठाने के साथ सीमांत इलाकों में सामाजिक ताने-बाने को प्रभावित करने और स्थानीय संस्कृति और अस्मिता को ठेस पहुंचाने का काम कर रहे हैं। ऐसे में घुसपैठियों के खिलाफ सघन कार्रवाई होनी ही चाहिए। इसी के साथ यह भी आवश्यक है कि घुसपैठियों के मददगारों के खिलाफ कठोर कार्रवाई की जाए,क्योंकि अब यह स्पष्ट है कि वे किसी साजिश के तहत सुनियोजित तरीके से उन्हें भारत में लाकर जनसांख्यिकी को बदल रहे हैं और देश की सुरक्षा के लिए खतरा पैदा कर रहे हैं।

इच्छा मृत्यु और आत्महत्या : जब न्यायालय भी जीवन का सम्मान करता है,तो हम निराशा के आगे क्यों हार जाते हैं?

सुप्रीम कोर्ट ने इच्छा मृत्यु की अनुमति भी असाधारण परिस्थितियों में दी...लेकिन समाज में लोग जीवन के सारे रास्ते खुले होने के बावजूद आत्महत्या जैसा कदम क्यों उठा रहे हैं?...

रवि सिंह कोरिया, छत्तीसगढ़

भारत में मार्च 2026 का महीना न्यायिक इतिहास में एक महत्वपूर्ण अध्याय के रूप में दर्ज हो गया, पहली बार सुप्रीम कोर्ट ने एक ऐसे व्यक्ति के मामले में इच्छा मृत्यु की अनुमति दी,जो करीब 13 वर्षों से कोमा में था और पूरी तरह जीवनरक्षक उपकरणों पर निर्भर था,32 वर्षीय हरीश राणा के मामले में अदालत ने चिकित्सकीय रिपोर्ट,विशेषज्ञों की राय और परिवार की सहमति के आधार पर यह माना कि अब चिकित्सा विज्ञान के पास उसके सामान्य जीवन में लौटने की कोई वास्तविक संभावना नहीं बची है, ऐसे में जीवनरक्षक प्रणाली हटाने की अनुमति दी गई,यह फैसला केवल एक व्यक्ति का मामला नहीं था,बल्कि इसने यह भी स्पष्ट कर दिया कि भारतीय न्याय व्यवस्था जीवन को सर्वोच्च मानती है, अदालत ने इच्छा मृत्यु को सामान्य अधिकार नहीं माना,बल्कि केवल उन असाधारण परिस्थितियों के लिए स्वीकार किया, जहां जीवन बचाने की कोई वास्तविक संभावना शेष नहीं हो,यहीं से एक दूसरा और कहीं अधिक गंभीर सवाल जन्म लेता है,एक ओर न्यायालय किसी व्यक्ति का जीवन बचाने के लिए वर्षों तक इंतजार करता है और हर संभावना समाप्त होने के बाद ही इच्छा मृत्यु कीअनुमति देता है,दूसरी ओर समाज में हर वर्ष हजारों लोग ऐसे हैं, जिनके सामने जीवन के अनेक रास्ते खुले होते हैं, फिर भी वे आत्महत्या का रास्ता चुन लेते हैं,क्या यह केवल मानसिक कमजोरी है? क्या यह सामाजिक दबाव है? क्या यह संवादहीनता है? या फिर हम ऐसा समाज बनते जा रहे हैं, जहां कठिनाइयों से लड़ने के बजाय उनसे भागना आसान लगने लगा है?

प्रकाशक: दैनिक घटती-घटना

न्यायालय भी जीवन को बचाने के हर संभव प्रयास के बाद ही इच्छा मृत्यु जैसे निर्णय की अनुमति देता है, तो यह समाज के लिए भी संदेश है कि जब तक आशा की एक किरण भी शेष है, तब तक हार नहीं माननी चाहिए, आत्महत्या किसी समस्या का समाधान नहीं, बल्कि उन सभी संभावनाओं का अंत है जो आने वाला कल बदल सकती थीं,इसलिए आवश्यकता इस बात की है कि हम अपने आसपास के लोगों, विशेषकर बच्चों और युवाओं की मनःस्थिति को समझें,उनसे संवाद करें और उन्हें यह विश्वास दिलाएं कि हर अंधेरे के बाद उजाला अवश्य आता है।

इच्छा मृत्यु और आत्महत्या में सबसे बड़ा अंतर समझना होगा–अक्सर लोग इन दोनों विषयों को एक नजर से देखते हैं,जबकि दोनों में जमीन-आसमान का अंतर है,इच्छा मृत्यु उस स्थिति के लिए है जहां व्यक्ति चिकित्सा विज्ञान की दृष्टि से सामान्य जीवन में लौटने की संभावना लगभग समाप्त हो चुकी हो,वहां अदालत,डॉक्टरों का बोर्ड, परिवार और कानूनी प्रक्रिया मिलकर निर्णय लेते हैं,जबकि आत्महत्या अधिकांश मामलों में ऐसे समय होती है जब जीवन समाप्त नहीं हुआ होता, बल्कि व्यक्ति का साहस टूट जाता है, समस्या अस्थायी होती है,लेकिन निर्णय स्थायी हो जाता है, यही सबसे बड़ा अंतर है।

99 प्रतिशत मामलों में समाधान मौजूद होता है–पिछले कुछ वर्षों में सामने आए आत्महत्या के अनेक मामलों को देखें तो अधिकांश घटनाओं में व्यक्ति के सामने विकल्प मौजूद थे, परिवार था,कानून था,न्याय पाने का रास्ता था,समाज का सहयोग मिल सकता था,समय के साथ परिस्थितियां बदल सकती थीं, लेकिन कुछ मिनटों, कुछ घंटों या कुछ दिनों का मानसिक दबाव व्यक्ति को यह विश्वास दिला देता है कि अब कोई रास्ता नहीं बचा, यहीं सबसे बड़ी त्रासदी शुरू होती है।

बैकुंठपुर की घटना ने फिर वही सवाल खड़ा कर दिया–कोरिया जिले के बैकुंठपुर में 17 वर्षीय आदिवासी छात्रा की आत्महत्या ने पूरे प्रदेश को झकझोर दिया,मामले की जांच अभी जारी है और अंतिम निष्कर्ष जांच के बाद ही सामने आएंगे,लेकिन इस घटना ने समाज के सामने एक ऐसा प्रश्न रख दिया है जिसे अनदेखा नहीं किया जा सकता, यदि उस बच्ची को समय पर यह भरोसा दिलाया जाता कि गलती हुई है तो कानून है,परिवार है,जीवन खत्म नहीं हुआ है,तो क्या परिणाम अलग हो सकता था? यह प्रश्न केवल पुलिस से नहीं है,यह परिवार से भी है, यह समाज से भी है, यह स्कूलों से भी है,यह हम सब से है।

हम बच्चों की पढ़ाई समझते हैं, मनोदशा नहीं–आज अभिभावक बच्चों की पढ़ाई पर घंटों चर्चा करते हैं, अंक कम आए तो चिंता होती है, मोबाइल ज्यादा चला लिया तो डांट पड़ती है,लेकिन कितने अभिभावक रोज अपने बच्चों से यह पूछते हैं आज तुम्हारा मन कैसा है? कोई बात परेशान तो नहीं कर रही? किसी ने तुम्हें अपमानित तो नहीं किया? बच्चे अक्सर अपनी सबसे बड़ी लड़ाई अपने भीतर अकेले लड़ते हैं, जब तक परिवार को पता चलता है, तब तक बहुत देर हो चुकी होती है।

आत्महत्या कभी समस्या का समाधान नहीं होती–कानून भी यही कहता है, मनोवैज्ञानिक भी यही कहते हैं, धर्म भी यही कहता है,जीवन की हर कठिनाई अस्थायी है,लेकिन आत्महत्या स्थायी निर्णय है,जो व्यक्ति यह कदम उठाता है,वह केवल अपना जीवन समाप्त नहीं करता,बल्कि अपने पीछे ऐसा खालीपन छोड़ जाता है जिसे उसका परिवार जीवनभर भर नहीं पाता।

समाज को भी बदलना होगा–हम अक्सर किसी घटना के बाद दोषी तलाशने लगते हैं,.लेकिन बहुत कम लोग यह सोचते हैं कि ऐसी घटनाएं दोबारा न हों,इसके लिए क्या किया जाए,किसी व्यक्ति का सार्वजनिक अपमान,सोशल मीडिया पर ट्रोलिंग, छोटी-छोटी बातों को प्रतिष्ठा का प्रश्न बना देना,बच्चों पर अत्यधिक अपेक्षाओं का दबाव–ये सब धीरे-धीरे मानसिक तनाव का कारण बनते हैं,आज आवश्यकता केवल कानून की नहीं, बल्कि संवेदनशील समाज की है।

पुलिस और प्रशासन की भूमिका भी महत्वपूर्ण–जब किसी विवाद में नाबालिग या मानसिक रूप से तनावग्रस्त व्यक्ति शामिल हो, तब केवल कानूनी प्रक्रिया पर्याप्त नहीं होती, ऐसे मामलों में संवेदनशील व्यवहार, मनोवैज्ञानिक समझ और समय पर परामर्श भी उतना ही आवश्यक है, कई बार एक सही शब्द, एक भरोसा और कुछ मिनटों की बातचीत किसी की जान बचा सकती है।

हर संकट का दूसरा रास्ता होता है–इतिहास गवाह है कि जिन लोगों ने सबसे कठिन परिस्थितियों का सामना किया, वही आगे चलकर समाज के लिए प्रेरणा बने ,गरीबी, असफलता, अपमान, मुकदमे,आर्थिक संकट–इनमें से कोई भी परिस्थिति जीवन समाप्त करने का कारण नहीं हो सकती, जीवन संघर्ष का दूसरा नाम है,जो संघर्ष करता है,वही आगे बढ़ता है।

समाज के लिए सबसे बड़ा संदेश–सुप्रीम कोर्ट ने इच्छा मृत्यु की अनुमति तब दी, जब जीवन बचाने का हर रास्ता समाप्त हो चुका था,लेकिन आत्महत्या के अधिकांश मामलों में जीवन बचाने के रास्ते समाप्त नहीं होते,बल्कि व्यक्ति का विश्वास समाप्त हो जाता है,यही विश्वास हमें लौटाना होगा, परिवार को बच्चों से संवाद बढ़ाना होगा,स्कूलों को मानसिक स्वास्थ्य पर काम करना होगा,पुलिस और प्रशासन को संवेदनशील हस्तक्षेप की संस्कृति विकसित करनी होगी,और समाज को यह समझना होगा कि किसी भी व्यक्ति की एक गलती,एक असफलता या एक अपमान उसके पूरे जीवन से बड़ा नहीं हो सकता।

सदियों पुरानी परंपरा का जीवंत उत्सव है जगन्नाथ रथ यात्रा

योगेश कुमार गोयल फ्नजफ्फगढ़, नई दिल्ली

भारत की धार्मिक और सांस्कृतिक परंपराएं अनादि काल से मानवता को आध्यात्मिकता, समरसता और भक्ति की राह पर चलने की प्रेरणा देती आई हैं। इन्हीं पवित्र परंपराओं में एक है उड़ीसा के पुरी में निकलने वाली जगन्नाथ रथ यात्रा,जो केवल एक धार्मिक उत्सव नहीं बल्कि करोड़ों आस्थाओं,परंपराओं और लोक मान्यताओं का प्रतीक है। हिंदू पंचांग के अनुसार, आषाढ़ मास के शुक्ल पक्ष की द्वितीया तिथि से शुरू हुई यह यात्रा नौ दिनों तक चलती है,जो 24 जुलाई को समाप्त होगी। इस दौरान भगवान जगन्नाथ अपने बड़े भाई बलराम और बहन सुभद्रा के साथ भव्य रथों पर सवार होकर पुरी के मुख्य मंदिर से निकलकर मौसी के घर गुंडिचा मंदिर तक की यात्रा करते हैं। यह आयोजन न केवल भारत के सबसे प्राचीन धार्मिक उत्सवों में से एक है बल्कि विश्व के सबसे बड़े वार्षिक सार्वजनिक आयोजनों में भी इसकी गिनती होती है, जिसमें लाखों श्रद्धालु देश-विदेश से भाग लेने आते हैं।

पुरी का जगन्नाथ मंदिर भारत के चार प्रमुख धामों (बद्रीनाथ, द्वारका,रामेश्वरम और पुरी) में से एक है। यह मंदिर न केवल वास्तुकला की दृष्टि से विशिष्ट है बल्कि इसकी महत्ता धार्मिक ही नहीं, सांस्कृतिक,ऐतिहासिक और आध्यात्मिक दृष्टि से भी अत्यंत विशिष्ट है। भगवान जगन्नाथ को विष्णु के अवतार के रूप में पूजा जाता है और यह मंदिर उनके भाई बलभद्र तथा बहन सुभद्रा के साथ विराजने वाले एकमात्र मंदिर के रूप में प्रसिद्ध है। रथ यात्रा के माध्यम से यह 'त्रिदेव' जब मंदिर की सीमाओं से बाहर निकलते हैं तो भक्तों के लिए यह अवसर होता है प्रभु को निकट से देखने, उनके रथ को खींचने और मोक्ष की दिशा में एक कदम बढ़ाने का। इस रथ यात्रा की परंपरा का उल्लेख स्कंद पुराण, ब्रह्म पुराण और अन्य पुरातन ग्रंथों में मिलता है। मान्यता है कि रथ यात्रा में भाग लेने और विशेषकर रथ खींचने से समस्त पापों का नाश होता है और व्यक्ति को जन्म-मरण के चक्र से मुक्ति मिलती है। यह यात्रा मानवीय समर्पण और भक्ति की पराकाष्ठा का जीवंत प्रदर्शन है, जहां हर कोई, चाहे वह राजा हो या आमजन, एक ही पंक्ति में खड़ा होकर भगवान की सेवा करता है।

रथ यात्रा की सबसे अनूठी परंपरा है 'छेरा' की रस्म। यह रस्म रथ यात्रा के पहले दिन पुरी के राजा द्वारा निभाई जाती है, जिसमें वे सोने की झाड़ू से तीनों रथों की सफाई करते हैं। इस परंपरा का आध्यात्मिक और सामाजिक संदेश अत्यंत गहन है। एक राजा,जो स्वयं राज्य का सर्वोच्च होता है, भगवान के समक्ष स्वयं को एक सेवक मानकर झाड़ू लगाता है। यह प्रतीक है भगवान के समक्ष सभी के समान होने का, जहां न कोई ऊंचा है, न कोई नीचा। यह सामाजिक समरसता का वह आदर्श उदाहरण है,जो आज के समाज में अत्यंत आवश्यक है। जब लाखों की भीड़ 'जय जगन्नाथ' के उद्घोष के साथ इन रथों को खींचती है, तब वह केवल रथ नहीं खींच रही होती,वह अपनी भक्ति, आस्था, सेवा और आत्मशुद्धि की भावना को आगे बढ़ा रही होती है।

भगवान जगन्नाथ,बलराम और सुभद्रा के रथों को नंदीघोष,तालध्वज और दर्पदलन कहा जाता है, जिन्हें हर वर्ष नए सिरे से विशेष प्रकार की नीम की लकड़ी से निर्मित किया जाता है। इन रथों का निर्माण विशेष रीति-रिवाज और शास्त्र सम्मत विधियों से होता है,जिसमें सैंकड़ों शिल्पकार और सेवक कई महीनों तक जुटे रहते हैं। हर रथ की अपनी आकृति, रंग,ध्वज और प्रतीक होते हैं,जो देवताओं के स्वरूप और गुणों का प्रतिनिधित्व करते हैं। रथों की ऊंचाई और आकृति निश्चित नियमों के अनुसार होती है। नंदीघोष रथ की ऊंचाई लगभग 45 फीट होती है और इसमें 16 चक्के होते हैं। तालध्वज रथ में 14 चक्के होते हैं और इसकी ऊंचाई लगभग 44 फीट होती है। दर्पदलन रथ सबसे छोटा होता है, जिसमें 12 चक्के होते हैं और यह लगभग 43 फीट ऊंचा होता है। यात्रा के दौरान तीनों रथों को श्रीमंदिर से गुंडिचा मंदिर तक खींचा जाता है और वहां सात दिनों तक भगवान विश्राम करते हैं। यह यात्रा किसी साधारण जुलूस की तरह नहीं होती बल्कि यह हजारों वर्षों से चली आ रही ऐसी आध्यात्मिक परंपरा है, जिसे केवल आंखों से नहीं, आत्मा से अनुभव किया जाता है।

रथ यात्रा से जुड़े कई पौराणिक प्रसंग भी हैं,जिनमें से सबसे प्रसिद्ध स्कंद पुराण में वर्णित कथा है। इसके अनुसार,एक दिन भगवान श्रीकृष्ण की बहन सुभद्रा ने द्वारका शहर घूमने की इच्छा प्रकट की। तब श्रीकृष्ण और बलराम उन्हें रथ पर बैठाकर नगर दर्शन कराने ले गए। यही प्रसंग पुरी में जगन्नाथ रथ यात्रा के रूप में जीवंत होता है,जहां भगवान अपनी बहन को साथ लेकर नगर भ्रमण के लिए निकलते हैं। इस यात्रा के हर पड़ाव पर धार्मिक रस्में होती हैं, जैसे कि हेरा पंचमी, जब देवी लक्ष्मी क्रोधित होकर भगवान के देर से लौटने पर मंदिर के बाहर प्रतीक्षारत रहती हैं। इसके बाद बहुड़ा यात्रा होती है,जब भगवान जगन्नाथ गुंडिचा मंदिर से वापस अपने मुख्य मंदिर आते हैं। 24 जुलाई को वापसी के बाद उनका भव्य स्वागत किया जाएगा और सुनाबेसा रस्म के अंतर्गत उन्हें स्वर्णाभूषणों से सजाया जाएगा।

हम जब भोले से मिलते

कार्तिकेय कुमार त्रिपाठी राम
इन्दौर, मध्यप्रदेश

भोले से हम जब-भी मिलते,
मन भर बतियाया करते हैं,
अहं भाव को शब्दकोश में,
किंचित जगह नहीं देते हैं।
भोले से हम ....
जन्म लिया था जब धरती पर,
क्या कुछ लेकर आए थे ?
बंधी हुई थी तब ये मुट्ठी,
खाली हाथ अब जाओगे।
भोले से हम ...
धन,पद,मोह भरा ये जीवन,
अंधियारा लेकर आएगा,
कर्मों की जो राह सुधारी,
तो जीवन पा जाएगा।
भोले से हम ....
जब तक इच्छाओं की गंगा,
मन में तेरे बहा करेगी,
धुंध का छाया जो ये कोहरा,
कभी नहीं छट पाएगा।
भोले से हम ....
पशुपति के रूप को पढ़कर,
भाव सभी बखान रहे,
जो-जो बीता जैसे बीता,
बस भोले का भान रहे।
भोले से हम ....
नमन करो पावन भूमि को,
जहां भोले नें चरण धरे,
मन पावन कर ध्यान धरोगे,
पास पाओ भोले को खड़े।
भोले से हम ....

सुविचार

औकात,अहंकार का भ्रम या चरित्र का दर्पण?

डॉ. मुश्ताक अहमद हरदा,मध्यप्रदेश

औकात शब्द का अर्थ अक्सर लोग धन-दौलत,पदवी या पारिवारिक विरासत तक सीमित मान लेते हैं, जिसके अहंकार में वे दूसरों को नीचा दिखाने या उनकी गरिमा को कमतर आंकने की भूल कर बैठते हैं,लेकिन वास्तव में औक़ात का मापदंड किसी व्यक्ति के बैंक बैलेंस या रूतबे में नहीं, बल्कि उसके चरित्र की गहराई, संस्कारों की पुख्ता नींव और दूसरों के प्रति उसके व्यवहार में निहित होता है। एक ख़ानदानी और सभ्य इंसान की पहचान इस बात से होती है कि वह विपरीत परिस्थितियों और सामने वाले व्यक्ति की सामाजिक स्थिति के बावजूद अपनी शालीनता, सहानुभूति और विनम्रता को कैसे बनाए रखता है, क्योंकि असली औक़ात वह अर्जित की हुई पूंजी है जो व्यक्ति अपने हर दिन के मानवीय आचरण, क्षमाशीलता और नैतिकता के माध्यम से कमाता है। जब कोई व्यक्ति किसी दूसरे को उसकी औक़ात का एहसास दिलाने का प्रयास करता है, तो वह वास्तव में अपनी ही संकीर्ण मानसिकता, अहंकारी दृष्टिकोण और संस्कारों के खोख़लेपन को उजागर कर रहा होता है, क्योंकि सच्चा बड़प्पन दूसरों को छोटा साबित करने में नहीं, बल्कि स्वयं को इतना ऊंचा उठाने में है कि आपकी उपस्थिति मात्र से सामने वाला सम्मान का अनुभव करे। पद, अधिकार और भौतिक साधन समय के साथ बदल सकते हैं या नष्ट हो सकते हैं, लेकिन एक व्यक्ति का व्यक्तित्व, उसकी कथनी-करनी की समानता और उसकी उदारता ही वह शाश्वत पैमाना है जो यह सिद्ध करता है कि समाज में वास्तव में किस व्यक्ति का कद और औक़ात कितनी ऊंची है,और यही वह सत्य है जो केवल परिपक्व, सहृदय और सच्चे अर्थों में संस्कारी लोगों की महफ़िल में ही समझा जा सकता है।

मुस्कान,जो बर्फ हो गई....

डॉ. सुरेश कुमार मिश्रा उरतृप्त

हम एक ऐसे अजीब समय में जी रहे हैं जहाँ इंसान रिश्तों को दिल में रखने के बजाय सामान की तरह सहूलियत के खानों में फिट करने लगा है। उस रात जब कमरे का सन्नाटा बर्फ की तरह जम चुका था,उसने अपनी जीवनसंगिनी के उस वजूद को शांत कर दिया जो कभी चौके से लेकर उसके हर सुख-दुख में खटर-पटर करती थी। वह चाहता तो उस शरीर के बाकी हिस्सों को शहर के उस सुदूर, वीरान और उजाड़ कोने में मिट्टी तले हमेशा के लिए दफन कर सकता था, जहाँ किसी इंसान की परछाई तो क्या, परिंदे का भी पहुँचना नामुमकिन था। उसने ऐसा किया भी हाथ-पैर और बाकी जिस्म को उसने ज़मीन की उन अंधेरी गहराइयों में सौंप दिया जहाँ गुमनामी का साम्राज्य था। लेकिन जब बारी उस चेहरे की आई, जिससे उसने कभी सात फेरे लिए थे, तो उसके हाथ ठिठक गए। उसने उस ठंडे पड़ चुके सिर को उठाया और घर के कोने में रखे डबल-डोर फ्रिज के सबसे सुरक्षित हिस्से में ले जाकर रख दिया। यह कोई पागलपन नहीं, बल्कि इस आधुनिक और डिजिटल युग के एक पति का अपनी पत्नी के प्रति आखिरी, सबसे वफादार और गहरा समर्पण था, जिसे दुनिया शायद कभी समझ नहीं पाती।फ्रिज का वह कोना मानो उस घर का सबसे पवित्र मंदिर बन गया था, जहाँ प्रेम को ताज़ा रखने की एक अंतिम और नाकाम कोशिश चल रही थी। इंसान जब दुनिया के झमेलों से थक जाता है, तो वह उन चीज़ों की तरफ भागता है जो कभी नहीं बदलतीं, और उस बंद डिब्बे के भीतर का तापमान ठीक वैसा ही था जैसा उन दोनों के वैवाहिक जीवन का आखिरी हफ्ता। वह रोज़ दफ़्तर से आता, कोट उतारता और सीधे उस ठंडे बक्से का दरवाज़ा खोलकर उस चेहरे को निहारता,जो अब बिना किसी शिकायत के,बिना किसी ताने के, बिल्कुल शांत और मुद्राहीन होकर उसे देखता रहता था। समाज में इसे एक खौफनाक वारदात कहा जाएगा,अख़बार वाले इसे क्रूरता की पराकाष्ठा लिखेंगे, लेकिन उस चारदीवारी के भीतर यह एक मूक संवाद था,एक ऐसा मुहावरा जो ज़बान से नहीं, केवल आँखों से पढ़ा जा सकता था। उसने अपनी पत्नी के गुस्से, उसकी तीखी आवाज़ और रोज़-रोज़ के तानों से तंग आकर यह कदम उठाया था, लेकिन अब उसी शांति को सहेजने के लिए उसने अपनी पूरी गृहस्थी को एक कबाड़खाने और बर्फ की सिल्ली में तब्दील कर दिया था।

मोहल्ले वाले और पुलिस वाले अक्सर इस बात पर सिर खुजलाते रहे कि आख़िर कोई कातिल इतना शातिर होने के बाद इतनी बड़ी बेवकूफ़ी कैसे कर सकता है।

सूचना

समाचार पत्र में छपे समाचार एवं लेखों पर सम्पादक की सहमति आवश्यक नहीं है। हमारा ध्येय तथ्यों के आधार पर सटिक खबरें प्रकाशित करना है न कि किसी की भावनाओं को ठेस पहुंचाना। सभी विवादों का निपटारा अम्बिकापुर न्यायालय के अधीन होगा।

सम्पादक

पहले हाथ टूटा...फिर जान गई...अब भी सड़कों पर मौत बनकर घूम रहे सांड

चार महीने पहले दी थी चेतावनी...'कभी भी हो सकता है बड़ा हादसा',पिछले दिनों महिला की मौत के बाद भी नहीं बदले हालात

गणेश दादा गली से लेकर पूरे शहर में 'सांड राज', निगम के दावे हवा-हवाई,जिला प्रशासन की चुप्पी पर उठ रहा है सवाल

-संवाददाता-
अम्बिकापुर,19 जुलाई 2026 (घटती-घटना)।

शहर में आवारा सांडों का आतंक अब केवल असुविधा का विषय नहीं,बल्कि सीधे-सीधे नागरिकों की जान का खतरा बन चुका है। भातूपारा निवासी वीवी बाई की सांड के हमले में घायल होने के बाद रायपुर के डीकेएस अस्पताल में उपचार के दौरान हुई मौत ने नगर निगम और जिला प्रशासन की कार्यशैली पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। दुःखद बात यह है कि यह हादसा अचानक नहीं हुआ,बल्कि महीनों पहले दी गई चेतावनियों की अनदेखी का परिणाम है। करीब चार महीने पहले 20 मार्च 2026 को केदारपुर भट्ठी रोड स्थित गणेश दादा गली में दो खूंखार सांडों के आतंक को लेकर विस्तृत खबर प्रकाशित की गई थी। स्थानीय लोगों ने तब स्पष्ट कहा था कि ये सांड बिना किसी उकसावे के राहगीरों पर हमला कर रहे हैं और कभी भी किसी की जान जा सकती है। उस समय भी कई लोग घायल हुए थे और एक व्यक्ति का हाथ तक टूट गया था। आज वही आशंका सच साबित हो चुकी है। एक महिला की जान चली गई,लेकिन सवाल यह है कि क्या प्रशासन अब भी केवल हादसों के बाद जागेगा?

उनका कहना है- 'हफ्तों बीत गए, लेकिन कोई समाधान नहीं निकला। पहले एक व्यक्ति का हाथ टूटा, फिर एक महिला की जान चली गई, अब भी यही सांड लोगों की जान लेने की फिराक में घूम रहे हैं। आखिर नगर निगम और जिला प्रशासन कब जागेगा?

गणेश दादा गली में फिर वही हालात, लोग बोले—'अब अगला नंबर किसका?' स्थानीय वार्डवासी किशोर मनवानी का कहना है कि महिला की मौत के बाद भी गणेश दादा गली में कोई स्थायी कार्रवाई नहीं हुई।

एक सांड पकड़ा... फिर छोड़ दिया... और खत्म मान लिया अभियान

स्थानीय नागरिकों के अनुसार मार्च में खबर प्रकाशित होने के बाद नगर निगम ने केवल दिखावे की कार्रवाई की। एक सांड को पकड़कर शहर से बाहर छोड़ा गया,लेकिन कुछ ही दिनों में वह वापस उसी इलाके में पहुंच गया। इसके बाद न कोई निगरानी हुई,न स्थायी व्यवस्था बनाई गई। आज भी गणेश दादा गली और आसपास के क्षेत्रों में वही सांड खुलेआम घूम रहे हैं। तस्वीरें भी यही साबित करती हैं कि जिन सांडों से लोग महीनों पहले डरे हुए थे,वे अब भी उसी तरह गलियों में आतंक फैला रहे हैं।

भातूपारा में गई जान...लेकिन शहर में खतरा अब भी बरकरार

भातूपारा में सार्वजनिक नल पर पानी भर रही वीवी बाई पर अचानक सांड ने हमला कर दिया। सींग से उठाकर कई फीट दूर पटक दिया। गंभीर रूप से घायल महिला को पहले मेडिकल कॉलेज अस्पताल और बाद में रायपुर रेफर किया गया, जहां इलाज के दौरान उनकी मौत हो गई। इस घटना ने पूरे शहर को झकझोर दिया था,लेकिन इससे भी अधिक चिंता की बात यह है कि घटना के कई दिन बीत जाने के बाद भी शहर के विभिन्न मोहल्लों में सांड खुलेआम घूम रहे हैं।

हर प्रमुख चौक पर आवारा मवेशियों का कब्जा

शहर के गांधी चौक,देवीगंज रोड,गुदरी बाजार,संगम चौक,बस स्टैंड,आकाशवाणी चौक, भाटूपारा,केदारपुर, स्टेडियम चौपाटी और कई अन्य इलाकों में सुबह से रात तक आवारा सांड और मवेशी सड़क पर बैठे या घूमते दिखाई देते हैं। सबसे बड़ा खतरा तब होता है जब दो सांड आपस में लड़ते हुए अचानक दौड़ पड़ते हैं। ऐसे में राहगीर,बाइक चालक और स्कूली बच्चे सबसे ज्यादा जोखिम में रहते हैं। बताया गया कि कुछ समय पहले गांधी चौक पर ड्यूटी कर रहे ट्रैफिक पुलिस जवान पर भी सांड ने हमला कर दिया था,जिसमें वह गंभीर रूप से घायल हो गया था।

क्या केवल पशु पकड़ना ही समाधान है?

हर बड़ी घटना के बाद नगर निगम अभियान चलाने की घोषणा करता है। कुछ मवेशी पकड़ लिए जाते हैं,लेकिन कुछ दिनों बाद वही स्थिति फिर लौट आती है।

'स्थानीय लोगों का कहना है कि बच्चे स्कूल जाने से डरते हैं,बुजुर्ग घर से निकलने से पहले कई बार सड़क देखते हैं और महिलाएं अकेले निकलने से घबराती हैं।

विशेषज्ञों और स्थानीय नागरिकों का मानना है कि जब तक...

- पशु मालिकों की पहचान नहीं होगी।
- उन पर कड़ी आर्थिक कार्रवाई नहीं होगी।
- बार-बार पशु छोड़ने वालों पर कानूनी कार्रवाई नहीं होगी।
- स्थायी गौशाला एवं निगरानी व्यवस्था नहीं बनेगी।
- तब तक यह समस्या समाप्त नहीं हो सकती।

जवाबदेही तय कौन करेगा?

महिला की मौत के बाद महापौर ने निगम आयुक्त को तत्काल कार्रवाई के निर्देश दिए हैं। लेकिन जनता पूछ रही है—

- जब मार्च से लगातार शिकायतें मिल रही थीं,तब कार्रवाई क्यों नहीं हुई?
- घायल लोगों की घटनाओं के बाद भी व्यापक अभियान क्यों नहीं चलाया गया?
- क्या नगर निगम के पास आवारा मवेशियों के नियंत्रण की कोई दीर्घकालिक योजना नहीं है?
- क्या पशु मालिकों पर कार्रवाई केवल कागजों तक सीमित है?
- क्या हर बार किसी की मौत के बाद ही प्रशासन सक्रिय होगा?

जनता की मांग...अब केवल आश्वासन नहीं...स्थायी समाधान चाहिए...

शहरवासियों का कहना है कि अब केवल फोटो खिंचवाने वाले अभियान या औपचारिक निर्देश पर्याप्त नहीं हैं। यदि प्रशासन वास्तव में नागरिकों की सुरक्षा को लेकर गंभीर है तो शहरभर से आवारा सांडों को हटाने,पशु मालिकों पर कठोर कार्रवाई करने और स्थायी प्रबंधन व्यवस्था लागू करने की आवश्यकता है। भातुपारा की महिला की मौत केवल एक परिवार की त्रासदी नहीं, बल्कि पूरे शहर के लिए चेतावनी है। यदि अब भी प्रभावी कदम नहीं उठाए गए तो अगला हादसा कब और कहां होगा,यह कोई नहीं जानता।

भारतीय कलाकार संघ की राष्ट्रीय कार्यसमिति में संतोष कुमार विश्वकर्मा को बड़ी जिम्मेदारी

छत्तीसगढ़ से मार्गदर्शक मंडल व राष्ट्रीय कार्यसमिति सदस्य बनाए गए,झारखंड राज्य प्रभारी भी नियुक्त

-संवाददाता-
अम्बिकापुर,19 जुलाई 2026 (घटती-घटना)।

भारतीय कलाकार संघ ने संगठन के विस्तार और मजबूती की दिशा में महत्वपूर्ण निर्णय लेते हुए छत्तीसगढ़ के वरिष्ठ कलाकार एवं सामाजिक कार्यकर्ता संतोष कुमार विश्वकर्मा को मार्गदर्शक मंडल एवं राष्ट्रीय कार्यसमिति का सदस्य तथा झारखंड राज्य प्रभारी नियुक्त किया है। संगठन के राष्ट्रीय नेतृत्व द्वारा जारी इस निर्णय के बाद कला जगत एवं उनके शुभचिंतकों में खुशी का माहौल है। इस अवसर पर संतोष कुमार विश्वकर्मा ने भारतीय कलाकार संघ के राष्ट्रीय संयोजक अंकुर पेंटर सहित संगठन के सभी राष्ट्रीय एवं प्रदेश पदाधिकारियों के प्रति आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि

संगठन ने उन पर जो विश्वास जताया है, वह उसके लिए सदैव ऋणी रहेंगे और इस जिम्मेदारी का पूरी निष्ठा, ईमानदारी एवं समर्पण के साथ निर्वहन करेंगे। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय उच्च पदाधिकारियों, छत्तीसगढ़ एवं झारखंड के प्रदेश संयोजक, प्रदेश सलाहकार, प्रदेश अध्यक्ष, प्रदेश सचिव, प्रदेश संगठन मंत्री तथा झारखंड प्रदेश अध्यक्ष सहित सभी पदाधिकारियों की अनुशंसा एवं विश्वास के कारण उन्हें यह महत्वपूर्ण दायित्व मिला है। इसके लिए वे सभी का हृदय से धन्यवाद एवं आभार व्यक्त करते हैं। संतोष कुमार विश्वकर्मा ने कहा कि उनका प्रयास रहेगा कि भारतीय कलाकार संघ को और अधिक सशक्त एवं व्यापक बनाया जाए। संगठन की विचारधारा और उद्देश्यों को आगे बढ़ाने के लिए वे तन, मन और धन से सहयोग करते हुए कलाकारों को एकजुट करने तथा संगठन के विस्तार के लिए पूरी प्रतिबद्धता के साथ कार्य करेंगे। उन्होंने पुनः संगठन के राष्ट्रीय नेतृत्व एवं सभी पदाधिकारियों का धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा कि वे संगठन की अपेक्षाओं और विश्वास पर खरा उतरने का हरसंभव प्रयास करेंगे।

महापौर के घर से चंद कदम दूर 'अय्याशी का अड्डा'! शराब, कंडोम, स्काई शॉट और बुलेट के धमाकों से दहशत में वार्डवासी

स्थानीय कलाकार व वार्डवासी राकेश पांडेय का आरोप-पार्षद से लेकर पुलिस तक कई बार शिकायत की,आश्वासन मिला लेकिन कार्रवाई नहीं...बोले...कभी भी हो सकती है बड़ी वारदात

-संवाददाता-
अम्बिकापुर,19 जुलाई 2026 (घटती-घटना)।

शहर के वार्ड क्रमांक-4 स्थित एनडब्ल्यूजीएल चर्च के सामने महुआ पारा का खुला मैदान इन दिनों स्थानीय लोगों के लिए गंभीर परेशानी का कारण बन गया है। स्थानीय कलाकार एवं वार्डवासी राकेश पांडेय ने आरोप लगाया है कि शाम ढलते ही यह मैदान असामाजिक तत्वों का अड्डा बन जाता है,जहां खुलेआम शराबखोरी,अश्लील गतिविधियां,गंदगी और देर रात तक हंगामा होता है। सबसे हैरानी की बात यह है कि यह स्थान भाजपा पार्षद के वार्ड में है और महापौर मंजूषा भगत का निवास भी इसी इलाके के समीप है,जबकि पूर्व महापौर अजय तिर्की का घर सामने ही है फिर भी समस्या वर्षों से जस की तस बनी हुई है। राकेश पांडेय के अनुसार उन्होंने पार्षद,महापौर और पुलिस प्रशासन से कई बार शिकायत की, लेकिन किसी स्तर पर स्थायी समाधान नहीं निकला। उनका कहना है कि शाम होते ही महंगी गाड़ियों में युवक-युवतियां पहुंचते हैं और घंटों तक संदिग्ध गतिविधियां करते हैं।

वहीं दूसरी ओर बड़ी गाड़ियों से आने वाले लोग अंग्रेजी शराब और महुआ शराब पीकर बोतलें,डिस्पोजल,सिगरेट के पैकेट, गुटखा पाउच,कंडोम और अन्य आपत्तिजनक सामग्री मैदान में ही फेंककर चले जाते हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि पास के चिकन विक्रेताओं द्वारा भी मुर्गे के पंख,बीट और अन्य अपशिष्ट खुले मैदान में फेंक दिए जाते हैं,जिससे क्षेत्र में बदबू और गंदगी फैल रही है। प्लास्टिक कचरे का ढेर अलग से लगा रहता है। राकेश पांडेय का कहना है कि नई उम्र के लड़के-लड़कियां यहां देर रात तक गाड़ियों के बोनट पर जन्मदिन मनाते हैं और स्काई शॉट जैसे पटाखे चलाते हैं,जिनसे कई राउंड फायर जैसी तेज आवाज निकलती है। इसके अलावा बुलेट मोटरसाइकिलों से जानबूझकर तेज मिसफायर कर पूरे इलाके में दहशत का माहौल बनाया जाता है। उनका कहना है कि आवाज इतनी तेज होती है कि ऐसा लगता है मानो कान फट जाएंगे।

'पुलिस को फोन किया,थाने भी गया...लेकिन पेट्रोलिंग नहीं हुई ' : राकेश पांडेय ने बताया कि उन्होंने गांधीनगर थाने में कई बार फोन किया। मुंशी ने बाद में बात करने की बात कही,लेकिन दोबारा संपर्क नहीं किया। थाना प्रभारी को भी अलग-अलग नंबरों से कई बार फोन लगाया, लेकिन फोन रिसीव नहीं हुआ। बाद में स्वयं थाने जाकर उन्होंने थाना प्रभारी से मुलाकात की। थाना प्रभारी ने रात 8 बजे से 12 बजे के बीच दो-तीन बार पेट्रोलिंग कराने का आश्वासन दिया,लेकिन उनके अनुसार आज तक एक बार भी नियमित पेट्रोलिंग नहीं हुई।

बड़ी घटना हुई तो जिम्मेदार कौन?

राकेश पांडेय का कहना है कि जब भी मोहल्लेवासी असामाजिक तत्वों को रोकने का प्रयास करते हैं तो वे मारपीट पर उतारू हो जाते हैं। परिवार के साथ रहने वाले लोग भय के माहौल में जीवन जीने को मजबूर हैं। उन्होंने सवाल उठाया कि यदि भविष्य में कोई बड़ी आपराधिक घटना हो जाती है तो उसकी जिम्मेदारी किसकी होगी?

प्रशासन से कार्रवाई की मांग...

राकेश पांडेय ने पुलिस महानिरीक्षक (आईजी),पुलिस अधीक्षक (एसपी) और कलेक्टर से मामले को गंभीरता से लेते हुए तत्काल कार्रवाई की मांग की है। उन्होंने मैदान में नियमित पुलिस पेट्रोलिंग, असामाजिक तत्वों पर सख्त कार्रवाई, गंदगी फैलाने वालों पर जुर्माना तथा क्षेत्र में पर्याप्त प्रकाश व्यवस्था और निगरानी की व्यवस्था सुनिश्चित करने की अपील की है।

मोबाइल दुकान में सेंध लगाकर मोबाइल एलईडी व सीसीटीवी कैमरे की चोरी

-संवाददाता-
प्रेमनगर,19 जुलाई 2026 (घटती-घटना)।

सूरजपुर जिले के प्रेमनगर में एक मोबाइल दुकान में सेंध लगाकर चोरों ने करीब 2.86 लाख रुपए के मोबाइल, एलईडी, सीसीटीवी कैमरे और नकदी पार कर दी। वारदात की सूचना पर पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। पुलिस के अनुसार ग्राम सलका साढामार निवासी कृष्ण कुमार साहू (25) प्रेमनगर में किराए के मकान में मोबाइल दुकान संचालित करते हैं। उन्होंने रिपोर्ट दर्ज कराई कि 17-18 जुलाई की दरम्यानी रात अज्ञात चोर दुकान के पीछे की दीवार तोड़कर अंदर घुस गए। चोर दुकान में रखे 16 नए मोबाइल, दो सीसीटीवी कैमरे, 24 इंच की एलईडी टीवी तथा गल्ले में रखे करीब दो हजार रुपए नकद चोरी कर ले गए। शनिवार सुबह करीब 10 बजे दुकान खोलने पर पीछे की दीवार टूटी मिली और सामान गायब था। चोरी गए सामान की कुल कीमत 2 लाख 86 हजार 550 रुपए बताई गई है। इसमें विभिन्न कंपनियों के पोको, वीवो, ओप्पो और रियलमी ब्रांड के मोबाइल शामिल हैं। प्रेमनगर पुलिस ने पीड़ित की शिकायत पर भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) की धारा 331(4) एवं 305 के तहत अपराध दर्ज कर विवेचना शुरू कर दी है। पुलिस आसपास के सीसीटीवी फुटेज और अन्य साक्ष्यों के आधार पर चोरों की तलाश कर रही है।

127 किसानों के खातों से करीब 1.93 करोड़ रुपए के फर्जी आहरण, एक आरोपी गिरफ्तार

-संवाददाता-
अम्बिकापुर,19 जुलाई 2026 (घटती-घटना)।

जिला सहकारी केंद्रीय बैंक अंबिकापुर की पेटला शाखा में किसान क्रेडिट कार्ड (केसीसी) ऋण वितरण में हुई कथित अनियमितता के मामले में सीतापुर पुलिस ने एक और आरोपी को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपी के खिलाफ कार्रवाई कर जेल दाखिल कर दिया है। पुलिस के अनुसार कलेक्टर सरगुजा द्वारा गठित जांच दल की रिपोर्ट में सामने आया था कि जिला सहकारी केंद्रीय बैंक की पेटला शाखा में 127 किसानों के फर्जी हस्ताक्षर कर उनके खातों से 1 करोड़ 92 लाख 82 हजार 96 रुपए का अनियमित आहरण किया गया। जांच में तत्कालीन शाखा प्रबंधक,सहायक लेखापाल, कैशियर, सामान्य सहायक,दैनिक वेतनभोगी कंप्यूटर ऑपरेटर तथा संबंधित समिति प्रबंधक की भूमिका सामने आने पर कलेक्टर कार्यालय के निर्देश पर एफआईआर दर्ज की गई थी। विवेचना के दौरान पुलिस को मिले साक्ष्यों के आधार पर दीपक कुमार चक्रधारी (29), निवासी ग्राम अखोराकला,थाना जयनगर,जिला सूरजपुर को हिरासत में लेकर पूछताछ की गई। पुलिस के अनुसार पूछताछ में उसकी भूमिका सामने आने पर शनिवार दोपहर उसे गिरफ्तार कर जेल दाखिल कर दिया है। पुलिस ने बताया कि मामले की विवेचना जारी है और अन्य आरोपियों की भूमिका की भी जांच की जा रही है।

अंबिकापुर को मिली अत्याधुनिक डायग्नोस्टिक सुविधा, 'अम्बिका सोनोग्राफी' का आज होगा शुभारंभ

-संवाददाता-
अम्बिकापुर,19 जुलाई 2026 (घटती-घटना)।

शहर में आधुनिक स्वास्थ्य सेवाओं के विस्तार की दिशा में एक और महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए 'अम्बिका सोनोग्राफी डायग्नोस्टिक एंड इंटरवेंशन क्लिनिक' का शुभारंभ सोमवार, 20 जुलाई को किया जाएगा। अत्याधुनिक तकनीकों से सुसज्जित यह केंद्र मरीजों को एक ही छत के नीचे उन्नत जांच सुविधाएं उपलब्ध कराएगा। क्लिनिक में सरगुजा संभाग की पहली ऐसी सीटी स्कैन मशीन स्थापित की गई है,जिसके माध्यम से बिना किसी इनवेसिव प्रक्रिया के महज एक मिनट में हार्ट ब्लॉकेज की जांच की जा सकेगी। इसके अलावा 3डी/4डी सोनोग्राफी,कलर डॉपलर, मैमोग्राफी,डिजिटल एक्स-रे सहित अन्य आधुनिक जांच सुविधाएं भी उपलब्ध रहेंगी।

सुबह 11 बजे होगा उद्घाटन समारोह : क्लिनिक का शुभारंभ सुबह 11 बजे सीएमओ कार्यालय के समीप,दरीपारा स्थित परिसर में होगा। समारोह की अध्यक्षता प्रदेश के कैबिनेट मंत्री रामविचार नेताम करेंगे। मुख्य अतिथि के रूप में मंत्री श्याम बिहारी जायसवाल तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में मंत्री राजेश अग्रवाल उपस्थित रहेंगे। कार्यक्रम में सांसद चिंतामणि महाराज,पूर्व उप मुख्यमंत्री टी.एस. सिंह देव एवं पूर्व मंत्री अमरजीत भगत अतिविशिष्ट अतिथि के रूप में शामिल होंगे।

दिल्ली के विशेषज्ञ चिकित्सकों की सेवाएं मिलेंगी : क्लिनिक में रेडियोलॉजी सेवाएं डॉ. तुषार आनंद (सर गंगाराम अस्पताल, नई दिल्ली) तथा एनेस्थीसिया सेवाएं डॉ. अनीशा जायसवाल द्वारा प्रदान की जाएंगी। संस्थान के संस्थापक शिवलाल जायसवाल एवं संचालक परमानंद तिवारी ने क्षेत्रवासियों से उद्घाटन समारोह में शामिल होने तथा आधुनिक स्वास्थ्य सुविधाओं का लाभ उठाने की अपील की है।

कीचड़ में फंसे ट्रैक्टर को निकालने की कोशिश बनी जानलेवा,पलटने से युवक की मौत...

खेत की जुताई के दौरान हुआ हादसा,रिश्तेदार के यहां काम करने गया था युवक

-संवाददाता-
अम्बिकापुर,19 जुलाई 2026 (घटती-घटना)।

उदयपुर थाना क्षेत्र में खेत की जुताई के दौरान कीचड़ में फंसे ट्रैक्टर को निकालने की कोशिश एक युवक के लिए जानलेवा साबित हुई। ट्रैक्टर अचानक पीछे की ओर पलट गया और चालक उसके नीचे दब गया। मौके पर ही उसकी मौत हो गई। पुलिस ने मर्ग कायम कर मामले की जांच शुरू कर दी है। पुलिस के अनुसार ग्राम रामनगर के तेंदूटिकरा निवासी बालम सिंह नेटी (37) शनिवार को अपने रिश्तेदार के खेत की जुताई करने गया था। जुताई के दौरान ट्रैक्टर कीचड़ में फंस गया। काफी प्रयास के बाद भी ट्रैक्टर नहीं निकला तो उसने नागर हटाकर केजव्हील लगाया। इसके बाद केजव्हील में दोनों ओर मोटी लकडियां फंसाकर ट्रैक्टर निकालने का प्रयास किया। इसी

दौरान ट्रैक्टर का अगला हिस्सा अचानक ऊपर उठ गया और वाहन पीछे की ओर पलट गया। चालक सीट पर बैठे बालम सिंह ट्रैक्टर के नीचे दब गए,जिससे उनकी मौके पर ही मौत हो गई।

रिश्तेदारों ने निकाला, अस्पताल में हुई पुष्टि : हादसे के बाद मौके पर मौजूद रिश्तेदारों और ग्रामीणों ने काफी मशक्कत के बाद युवक को ट्रैक्टर के नीचे से बाहर निकाला। सूचना मिलते ही परिजन घटनास्थल पहुंचे। बाद में शव को उदयपुर अस्पताल लाया गया, जहां डॉक्टरों ने जांच के बाद उसे मृत घोषित कर दिया। पोस्टमार्टम के बाद पुलिस ने शव परिजनों को सौंप दिया।

C M Y K

15 लाख का रपटा तीन दिन की बारिश में बहा !

दैनिक घटती-घटना की आशंका निकली सही, रपटा के साथ विभाग की 'नाक' भी बह गई

गोबरी नदी का बहाव तेज, विभाग की तैयारी फेल!

गोबरी नदी ने ले ली पहली परीक्षा,15 लाख का रपटा हुआ फेल

'दैनिक घटती-घटना' की चेतावनी साबित हुई सही,पहली ही बरसात में खुल गई निर्माण गुणवत्ता की पोल

'दैनिक घटती-घटना' ने 7 जुलाई को ही जताई थी आशंका और 18 जुलाई की रात बह गया 15 लाख का रपटा

एक साल इंतजार,एक महीने की राहत...तीन दिन की बारिश में खत्म हुआ 15 लाख का रपटा

15 लाख का रपटा पानी में समाया, अब जवाबदेही किसकी?

जिस रपटा को बताया गया था राहत, वही पहली बारिश में बन गया आफत

गोबरी नदी की पहली परीक्षा में फेल हुई वैकल्पिक व्यवस्था,हजारों ग्रामीणों का संपर्क फिर

15 लाख का रपटा तीन दिन में 'स्वाहा'! रपटा के साथ विभाग की 'नाक' भी बह गई?

-ओंकार पांडेय-

सूरजपुर 19 जुलाई 2026 (घटती-घटना)।

30 जून 2025 को गोबरी नदी पर बना करोड़ों रुपये की लागत वाला स्थायी पुल धराशायी हुआ था, उस दिन हजारों ग्रामीणों का राष्ट्रीय राजमार्ग क्रमांक-43 से सीधा संपर्क टूट गया था, प्रशासन ने भरोसा दिया कि जल्द नया पुल बनेगा और तब तक वैकल्पिक व्यवस्था की जाएगी, लेकिन एक साल बीत गया,नया पुल नहीं बना, आखिरकार लगभग एक माह पहले करीब 15 लाख रुपये की लागत से वैकल्पिक रपटा पुल तैयार किया गया, ताकि बरसात में ग्रामीणों का आवागमन बाधित न हो। लेकिन प्रकृति ने इस वैकल्पिक व्यवस्था की परीक्षा लेने में ज्यादा समय नहीं लगाया,लगातार तीन दिन की बारिश हुई और वह रपटा,जिसे बनने में लगभग एक वर्ष लग गया था,तेज बहाव के सामने टिक नहीं सका,रपटा बह गया और एक बार फिर हजारों ग्रामीणों का संपर्क टूट गया,सबसे दिलचस्प बात यह है कि दैनिक घटती-घटना ने 7 जुलाई 2026 को ही अपने समाचार में आशंका जताई थी कि गोबरी नदी के तेज बहाव के सामने यह रपटा पहली बरसात में ही असली परीक्षा देगा, आज जब रपटा बह गया है तो ग्रामीण कह रहे हैं कि अखबार ने जो आशंका जताई थी, वही हकीकत बन गई।

एक साल की तैयारी...तीन दिन में खत्म

30 जून 2025 को पुल टूटने के बाद प्रशासन ने पहले लोगों को आश्वासन दिया,फिर सर्वे हुए,निरीक्षण हुए, प्रस्ताव बने और आखिरकार एक वर्ष बाद रपटा तैयार हुआ,लोगों को लगा कि अब कम से कम इस बरसात में राहत मिलेगी,लेकिन बरसात ने जैसे ही रफ्तार पकड़ी,तीन दिन की लगातार बारिश ने पूरी व्यवस्था की पोल खोल दी,जिस रपटा को जनता की जीवन रेखा बताया जा रहा था,वह तेज बहाव के सामने टिक नहीं सका, अब लोग पूछ रहे हैं—यदि वैकल्पिक व्यवस्था तीन दिन की बारिश नहीं झेल सकी तो आखिर इसे बनाया किस मानक पर गया था?

दैनिक घटती-घटना ने पहले ही जता दी थी आशंका

जब रपटा बनकर तैयार हुआ था तब भी दैनिक घटती-घटना ने केवल उद्घाटन की खबर नहीं छापी थी, अखबार ने सवाल उठाया था कि यह गोबरी नदी सामान्य नदी नहीं है, क्षेत्र के पहाड़ों से उतरने वाला पानी, गोबरी जलाशय का अतिरिक्त प्रवाह और बरसात के समय तेज धारा इस नदी को बेहद उग्र बना देती है, इसी कारण अखबार ने लिखा था कि 'इस बरसात में रपटा की सबसे बड़ी परीक्षा होगी, आज वही परीक्षा हुई और परिणाम सबके सामने है।

व्यंग्यः रपटा के साथ बह गई विभाग की 'नाक'

गोबरी नदी इस बार केवल मिट्टी, गिट्टी और सीमेंट नहीं बहाकर ले गई,ग्रामीणों की जुबान पर एक ही तंज है की रपटा के साथ-साथ विभाग की नाक भी बह गई,एक साल तक इंतजार कर जनता को जो वैकल्पिक व्यवस्था दी गई थी, वह तीन दिन की बारिश में ही जवाब दे गई, अब सवाल यह नहीं है कि रपटा बहा या नहीं, सवाल यह है कि क्या निर्माण की गुणवत्ता भी पानी में बह गई?

पहले पुल टूटा...फिर रपटा बहा...अब भरोसा किस पर?- पिछले वर्ष स्थायी पुल टूट गया, लोगों ने सोचा कि वैकल्पिक व्यवस्था राहत देगी,अब वैकल्पिक व्यवस्था भी बह गई, ग्रामीणों का कहना है कि अब उन्हें केवल आश्वासन नहीं,स्थायी समाधान चाहिए।

15 लाख का सवाल अब जनता पूछ रही है...

- क्या निर्माण से पहले नदी के वास्तविक जलस्तर और बहाव का अध्ययन किया गया था?
- क्या तकनीकी मानकों का पालन हुआ?
- क्या निर्माण कार्य की गुणवत्ता की जांच की गई?
- क्या निर्माण पूरा होने के बाद उसका निरीक्षण हुआ?
- यदि सब कुछ मानकों के अनुसार था तो रपटा इतनी जल्दी कैसे बह गया?

तीन दिन की बारिश ने खोल दी पूरी कहानी-जिस रपटा को बनने में महीनों लगे, उसे बहने में केवल तीन दिन लगे,यह तीन दिन केवल बारिश के नहीं थे,यह तीन दिन निर्माण गुणवत्ता,विभागीय निगरानी और तकनीकी तैयारी की भी परीक्षा थे,और यदि परिणाम केवल रपटा के बह जाने तक सीमित नहीं रहा,तो निश्चित रूप से यह पूरे निर्माण तंत्र के लिए गंभीर आत्ममंथन का विषय है।

अब कौन देगा जवाब?-अब लोगों की नजरें संबंधित विभाग पर हैं, क्या विभाग इसकी तकनीकी जांच कराएगा? क्या निर्माण एजेंसी से जवाब मांगा जाएगा? क्या गुणवत्ता की स्वतंत्र जांच होगी? क्या जिम्मेदारी तय होगी? या फिर यह मामला भी बारिश के पानी के साथ बह जाएगा?

जनता का दर्द फिर वहीं लौट आया-रपटा बनने के बाद किसानों को उम्मीद थी कि वे आसानी से अपनी उपज बाजार तक पहुंचा सकेंगे,विद्यार्थियों को लगा था कि अब स्कूल और कॉलेज पहुंचना आसान होगा,मरीजों को भरोसा था कि एम्बुलेंस समय पर अस्पताल तक पहुंच जाएगी,लेकिन अब फिर वही पुरानी परेशानी सामने है, लंबा चक्कर...अतिरिक्त खर्च...समय की बर्बादी...और बरसात में बढ़ती मुश्किलें।

व्यंग्यः नदी ने टेंडर नहीं पढ़ा-ग्रामीण हंसते हुए कहते हैं की गोबरी नदी ने शायद टेंडर की शर्तें नहीं पढ़ीं... उसे तो सिर्फ बहाव पता था, नदी ने यह नहीं देखा कि रपटा 15 लाख का है या 15 करोड़ का,उसने केवल उसकी मजबूती की परीक्षा ली,और परीक्षा का परिणाम सबके सामने है।

अब स्थायी पुल ही एकमात्र समाधान-अब स्पष्ट हो चुका है कि अस्थायी व्यवस्था लंबे समय का समाधान नहीं हो सकती, यदि हजारों लोगों को हर बरसात में राहत देनी है तो स्थायी पुल का निर्माण सर्वोच्च प्राथमिकता होना चाहिए,वैकल्पिक रपटा केवल आपातकालीन व्यवस्था हो सकता है, स्थायी समाधान नहीं।

दैनिक घटती-घटना का सवाल-दैनिक घटती-घटना ने पुल टूटने से लेकर रपटा बनने तक लगातार जनहित का मुद्दा उठाया, अखबार ने पहले पुल की जर्जर स्थिति दिखाई, और उसके टूटने की खबर प्रमुखता से प्रकाशित की,वैकल्पिक व्यवस्था की मांग उठाई, रपटा बनने के बाद एप्रोच रोड की बदहाली दिखाई और अंत में यह आशंका भी जताई कि पहली बरसात है रपटा की वास्तविक परीक्षा होगी, आज जब रपटा बह चुका है,तो अखबार का सवाल पहले से भी बड़ा हो गया है की क्या सार्वजनिक धन से बनने वाले निर्माण केवल पहली बारिश तक ही सीमित रहेंगे,या अब गुणवत्ता, जवाबदेही और तकनीकी मानकों को भी गंभीरता से लिया जाएगा? क्योंकि इस बार गोबरी नदी सिर्फ 15 लाख रुपये का रपटा नहीं बहाकर ले गई, बल्कि निर्माण गुणवत्ता पर किए गए दावों और विभाग की साख को भी कटघरे में खड़ा कर गई,अब लोगों की निगाहें इस बात पर हैं कि इस विफलता की जिम्मेदारी तय होती है या फिर अगली बरसात तक एक और नया रपटा बनाने की तैयारी शुरू होगी।

जिला अस्पताल से चोरी हुई बाइक बरामद,शातिर चोर गिरफ्तार

-संवाददाता-

अम्बिकापुर,19 जुलाई 2026 (घटती-घटना)।

सरगुजा पुलिस ने जिला अस्पताल परिसर से चोरी हुई मोटरसाइकिल के मामले का खुलासा करते हुए एक आरोपी को गिरफ्तार कर उसके कब्जे से लगभग 50 हजार रुपये कीमत की होंडा शाइन मोटरसाइकिल बरामद की है। मामले में शामिल एक अन्य आरोपी की तलाश जारी है। पुलिस के अनुसार बाबूपारा निवासी गंगा प्रसाद बंजारे ने थाना मणीपुर में रिपोर्ट दर्ज कराई थी कि 10 जुलाई की रात वह ड्यूटी के लिए अपनी होंडा शाइन (सीजी-09-जेई-7588) से जिला अस्पताल पहुंचे थे। उन्होंने बाइक अस्पताल परिसर के शेड के नीचे खड़ी की थी,लेकिन ड्यूटी समाप्त होने के बाद लौटने पर बाइक गायब मिली। काफी तलाश के बाद भी वाहन का पता नहीं चलने पर अज्ञात चोर के खिलाफ मामला दर्ज किया गया। विवेचना के दौरान पुलिस ने मुखबिर की सूचना पर नवागढ़ महामाया मंदिर के पास रहने वाले समीर अंसारी उर्फ गजनी (22 वर्ष) को हिरासत में लेकर पूछताछ की। पूछताछ में उसने अपने एक साथी के साथ मिलकर बाइक चोरी करना स्वीकार किया। आरोपी ने बताया कि दोनों चोरी की बाइक बेचने के लिए ग्राहक की तलाश कर रहे थे और वाहन को मठपारा के पास झाड़ियों में छिपाकर रखा था। आरोपी की निशानदेही पर पुलिस ने चोरी की मोटरसाइकिल बरामद कर जब्त कर ली। पूछताछ में यह भी सामने आया कि समीर अंसारी के खिलाफ पहले से भी चोरी और आगजनी सहित अन्य आपराधिक मामले दर्ज हैं। पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर न्यायालय में पेश कर दिया है, जबकि मामले में शामिल फरार आरोपी की तलाश जारी है। पुलिस का कहना है कि उसे भी जल्द ही गिरफ्तार कर लिया जाएगा।

युवक को कुचलकर भाग रहा कार चालक ग्रामीणों ने दबोचा

एनएच-43 पर पैदल घर लौट रहे व्यक्ति की मौत,पीछा कर चालक को पुलिस के हवाले किया

-संवाददाता-

अम्बिकापुर,19 जुलाई 2026 (घटती-घटना)।

अंबिकापुर-रायगढ़ राष्ट्रीय राजमार्ग-43 पर रविवार अलसुबह तेज रफ्तार कार की टक्कर से पैदल घर लौट रहे एक व्यक्ति की मौके पर ही मौत हो गई। हादसे के बाद चालक कार लेकर भागने लगा,लेकिन ग्रामीणों ने पीछा कर उसे पकड़ लिया और सीतापुर पुलिस के हवाले कर दिया। पुलिस ने कार जब्त कर चालक के खिलाफ मामला दर्ज कर लिया है। पुलिस के अनुसार सीतापुर थाना क्षेत्र के ग्राम मंगारी के कोलतापारा निवासी अर्जुन बखला (45) रविवार सुबह शौच के बाद पैदल घर लौट रहे थे। सुबह करीब 5 बजे वे जूनापारा के पास एनएच-43 किनारे चल रहे थे। इसी दौरान अंबिकापुर की ओर से आ रही तेज रफ्तार क्रेटा कार (सीजी 15 ईसी-5927) ने उन्हें जोरदार टक्कर मार दी। टक्कर इतनी भीषण थी कि अर्जुन करीब 15 मीटर दूर जा गिरे और उनकी मौके पर ही मौत हो गई। हादसे के बाद कार चालक, देवगढ़ निवासी टीके सिंह (48), मौके से भागने लगा। आसपास मौजूद ग्रामीणों ने उसका पीछा कर पकड़ लिया और सूचना मिलने पर पहुंचे पुलिसकर्मियों के हवाले कर दिया।

बिना सूचना शव ले जाने पर परिजनों ने जताई नाराजगी : पुलिस ने घटनास्थल से शव को पोस्टमार्टम के लिए सीतापुर अस्पताल भेज दिया। परिजनों का आरोप है कि उन्हें दुर्घटना की सूचना दिए बिना ही शव अस्पताल पहुंचा दिया गया। इस बात को लेकर उन्होंने नाराजगी जताई। पोस्टमार्टम के बाद शव परिजनों को सौंप दिया गया।

ब्लैक स्पॉट पर सीसीटीवी लगाने की मांग : ग्रामीणों का कहना है कि अंबिकापुर-सीतापुर मार्ग पर लगातार सड़क दुर्घटनाएं हो रही हैं। कई मामलों में दुर्घटना के बाद वाहन चालक फरार हो जाते हैं। उन्होंने हादसों पर अंकुश लगाने और आरोपियों की पहचान सुनिश्चित करने के लिए ब्लैक स्पॉट वाले स्थानों पर सीसीटीवी कैमरे लगाने की मांग की है।

अवैध हुकिंग से सिंचाई के दौरान किसान की करंट लगने से मौत

-संवाददाता-

अम्बिकापुर,19 जुलाई 2026 (घटती-घटना)।

बतौली थाना क्षेत्र के ग्राम झरगांव में अवैध बिजली हुकिंग से खेत की सिंचाई कर रहे किसान की करंट लगने से मौत हो गई। शुक्रवार शाम हुई घटना की जानकारी किसी को नहीं लग सकी। किसान रातभर घर नहीं लौटा तो परिजनों ने उसकी तलाश की। शनिवार दोपहर खेत में उसका शव पड़ा मिला। पुलिस ने मर्ग कायम कर मामले की जांच शुरू कर दी है। पुलिस के अनुसार ग्राम झरगांव निवासी रतन पैंकरा (41), पिता स्व. सकल राम पैंकरा, धान की रोपाई के लिए खेत में सिंचाई कर रहा था। बताया जा रहा है कि उसने बिजली के खंभे से अवैध हुकिंग कर मोटर पंप चलाया था। शुक्रवार शाम वह खेत में पानी की स्थिति देखने पहुंचा। इसी दौरान कटे हुए नंगे बिजली के तार की चपेट में आने से उसकी मौके पर ही मौत हो गई। शाम तक घर नहीं लौटने पर परिजनों ने रातभर उसकी तलाश की, लेकिन कोई जानकारी नहीं मिली। शनिवार दोपहर जब परिजन दोबारा खेत पहुंचे तो रतन का शव धान के खेत में औंधे मुंह पड़ा मिला। उसके शरीर से नंगा बिजली का तार चिपका हुआ था। सूचना पर बतौली पुलिस मौके पर पहुंची और शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा। पोस्टमार्टम के बाद शव परिजनों को सौंप दिया गया।

क्या एसपी के बयान से बदलेगा बैकुंठपुर आत्महत्या केस का नजरिया? पूर्व आरक्षक ने उठाए कई कानूनी सवाल

क्या आत्महत्या के लिए दुष्प्रेरण की धाराएं न्यायिक कसौटी पर टिकेंगी? सोशल मीडिया पर वायरल विश्लेषण ने बहस को दिया नया मोड़

बैकुंठपुर आत्महत्या कांड में एसपी के बयान और पूर्व आरक्षक के कानूनी विश्लेषण ने खड़े किए नए सवाल

'लड़की ने सामान उठाया था...' एसपी के बयान पर पूर्व आरक्षक का पलटवार, विवेचना पर उठे गंभीर प्रश्न

एसपी की मिडिया बयान बनाम कानूनी विश्लेषण में बैकुंठपुर आत्महत्या मामले में सोशल मीडिया पोस्ट से मचा नया विवाद

क्या पुलिस की कहानी में हैं विरोधाभास? पूर्व आरक्षक सियाराम साहू ने एसपी के बयान पर उठाए तीखे सवाल

बैकुंठपुर केस में नया मोड़,एसपी के बयान को आधार बनाकर पूर्व आरक्षक ने पुलिस विवेचना पर खड़े किए सवाल

आत्महत्या कांड पर नई बहस...एसपी के बयान के बाद पूर्व आरक्षक ने कानून की धाराओं के साथ खोली विवेचना की परतें

मीडिया बयान,गिरफ्तारी और कानूनी धाराएं...बैकुंठपुर केस में पूर्व आरक्षक के विश्लेषण से गरमाई बहस

क्या पुलिस की मीडिया बयान और केस डायरी एक जैसी कहानी कहती हैं?

रवि सिंह

एमसीबी,19 जुलाई 2026 (घटती-घटना)।

कोरिया जिले के बैकुंठपुर में 17 वर्षीय छात्रा की आत्महत्या का मामला अब केवल एक आत्महत्या या आपराधिक प्रकरण तक सीमित नहीं रह गया है,पुलिस की कार्रवाई,मीडिया में पुलिस अधीक्षक (एसपी) का बयान, आईसी मार्ट संचालकों की गिरफ्तारी,एससी-एसटी एक्ट के तहत दर्ज अपराध और अब पुलिस विभाग से बर्खास्त पूर्व आरक्षक सियाराम साहू का विस्तृत कानूनी विश्लेषण पूरे मामले को नई दिशा दे रहा है।

सियाराम साहू,जो पुलिस विभाग में आरक्षक रहे हैं और विभागीय कार्रवाई के बाद सेवा से बर्खास्त हो चुके हैं,लंबे समय से पुलिस व्यवस्था,विवेचना और कानून से जुड़े विषयों पर सोशल मीडिया के माध्यम से अपने विचार रखते रहे हैं,बैकुंठपुर प्रकरण में उन्होंने दैनिक घटती-घटना में प्रकाशित समाचार और पुलिस अधीक्षक की मीडिया का हवाला देते हुए एक विस्तृत फेसबुक पोस्ट लिखी है, जिसमें उन्होंने पुलिस की विवेचना,गिरफ्तारी,कानूनी धाराओं और मीडिया में कही गई बातों पर गंभीर सवाल उठाए हैं,हालांकि,यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि सियाराम साहू द्वारा व्यक्त किए गए अधिकांश निष्कर्ष उनके व्यक्तिगत कानूनी विश्लेषण और दावे हैं। इनकी स्वतंत्र पुष्टि नहीं हुई है और इन पर पुलिस का विस्तृत प्रतिवाद भी सार्वजनिक रूप से उपलब्ध नहीं है।

एसपी का बयान : 'लड़की ने सामान उठाया था,सीसीटीवी में घटना कैद हुई

पुलिस अधीक्षक ने मीडिया में कहा था कि पुलिस आरक्षक शिवकुमार की 17 वर्षीय बेटी बैकुंठपुर के फव्वारा चौक स्थित आईसी मार्ट में खरीदारी करने गई थी, खरीदारी के दौरान उसने कुछ सामान अपने पास रख लिया, जिसकी पूरी घटना दुकान के सीसीटीवी कैमरे में रिकॉर्ड हो गई, दुकान संचालक ने उसे रोककर भुगतान करने की बात कही और उससे लिखवाया भी गया, एसपी के अनुसार लड़की घर लौट गई और अगले दिन दोपहर अपने घर के किचन में फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली, उन्होंने इसे पुलिस परिवार और पूरे शहर के लिए अत्यंत दुःखद घटना बताया,मीडिया में एसपी ने यह भी कहा कि आरोपियों ने मोबाइल फोन बंद कर दिए थे,जिसके कारण पुलिस को तत्काल लोकेशन नहीं मिल रही थी,बाद में सूचना मिलने पर पुलिस टीम ने कार्रवाई कर आरोपियों को गिरफ्तार किया।

सबसे पहले जांच परिवार की भी होनी चाहिए- सियाराम साहू अपने पोस्ट में एक दूसरा विवादास्पद तर्क भी रखते हैं,वे लिखते हैं कि भारतीय परिवारों में यदि बच्चे गलती करते हैं तो माता-पिता स्वाभाविक रूप से डांटते-फटकारते हैं,कई बार मारपीट भी हो जाती है,उनका कहना है कि यदि लड़की को घर में डांटा गया या मानसिक दबाव पड़ा,तो उस पहलू की भी निष्पक्ष जांच होनी चाहिए थी, हालांकि यह उनका व्यक्तिगत अनुमान है,इसके समर्थन में उन्होंने कोई प्रत्यक्ष साक्ष्य प्रस्तुत नहीं किया है।

यहीं से शुरू होता है सियाराम साहू का विश्लेषण

सियाराम साहू का पहला और सबसे बड़ा तर्क यही है कि यदि स्वयं एसपी मीडिया में यह स्वीकार कर रहे हैं कि लड़की ने सामान उठाया था और घटना सीसीटीवी में कैद हुई थी,तो फिर पूरे मामले की कानूनी दिशा का मूल्यांकन इसी आधार से होना चाहिए,उनका कहना है कि एसपी के बयान से यह स्थापित होता है कि दुकान में कोई घटना हुई थी और दुकान संचालक ने उस पर कार्रवाई की।

क्या चोरी की भरपाई मांगना प्रताड़ना है?

सियाराम साहू का सबसे प्रमुख सवाल यही है, वे लिखते हैं कि यदि कोई व्यक्ति बिना भुगतान किए सामान लेकर निकलता है और दुकानदार उससे सामान का मूल्य मांगता है, तो इसे स्वतः मानसिक प्रताड़ना नहीं कहा जा सकता,उनके अनुसार किसी व्यापारी को अपने सामान की सुरक्षा और भुगतान मांगने का संवैधानिक अधिकार है,यहीं वे पुलिस विवेचना पर सवाल उठाते हैं कि क्या केवल इस आधार पर दुकानदारों पर आत्महत्या के लिए दुष्प्रेरण जैसी गंभीर धाराएं लगाई जा सकती हैं?

गिरफ्तारी पर सबसे बड़ा सवाल

सियाराम साहू ने अपने पोस्ट में सबसे गंभीर आरोप गिरफ्तारी को लेकर लगाया है,उन्होंने दावा किया कि प्रेसवार्ता में एसपी ने पहले राजस्थान का उल्लेख किया,फिर अनूपपुर की बात कही, इसके बाद उन्होंने आरोप लगाया कि उनके 'पुलिस विभाग में पदस्थ परिचितों' के अनुसार आरोपियों को बैकुंठपुर शहर के एक होटल से हिरासत में लिया गया,उन्होंने यहां तक लिखा कि यदि गिरफ्तारी पंचनामा में गिरफ्तारी स्थल बैकुंठपुर दर्शाया गया है और मीडिया में राजस्थान या अन्य स्थान का उल्लेख है,तो इसकी स्वतंत्र जांच होनी चाहिए,इस दावे की स्वतंत्र पुष्टि उपलब्ध नहीं है।

मोबाइल बंद था तो लोकेशन कैसे मिली?

सियाराम साहू ने पुलिस के उस कथन पर भी सवाल उठाया जिसमें कहा गया कि आरोपियों के मोबाइल बंद थे,उनका तर्क है कि यदि मोबाइल बंद थे तो सटीक लोकेशन कैसे प्राप्त हुई? उन्होंने साइबर सेल की कार्यप्रणाली पर भी सवाल उठाए और दावा किया कि इस पूरे पहलू की तकनीकी जांच होनी चाहिए, हालांकि पुलिस ने प्रेसवार्ता में कहा था कि सूचना तंत्र और तकनीकी इनपुट के आधार पर कार्रवाई की गई।

क्या सुसाइड नोट से ही बन जाता है अपराध?

अपने पोस्ट में सियाराम साहू ने कई सुप्रीम कोर्ट के फैसलों का हवाला दिया, उन्होंने Amalendu Pal vs State of West Bengal,Chitresh Kumar Chopra,Rajesh vs State of Haryana,Gurcharan Singh vs State of Punjab जैसे निर्णयों का उल्लेख करते हुए लिखा कि आत्महत्या के लिए दुष्प्रेरण सिद्ध करने के लिए केवल सुसाइड नोट पर्याप्त नहीं होता,उनके अनुसार अभियोजन को यह साबित करना पड़ता है कि आरोपी का प्रत्यक्ष उकसावा,जानबूझकर किया गया मानसिक उत्पीड़न अथवा ऐसा आचरण था जिससे आत्महत्या अपरिहार्य हो गई,यह उनकी कानूनी व्याख्या है,अंतिम निर्णय न्यायालय उपलब्ध साक्ष्यों के आधार पर करेगा।

एससी-एसटी एक्ट पर भी सवाल

सियाराम साहू ने एफआईआर में दर्ज एससी-एसटी एक्ट की धाराओं पर भी विस्तार से टिप्पणी की, उन्होंने कहा कि एफआईआर में जिस कथित जातिसूचक टिप्पणी का उल्लेख है, उसकी कानूनी वैधता का परीक्षण आवश्यक है, उन्होंने उड़ीसा हाईकोर्ट के एक निर्णय का हवाला देते हुए 'पब्लिक व्यू' की अवधारणा पर चर्चा की और कहा कि प्रत्येक विवाद स्वतः एससी-एसटी एक्ट का अपराध नहीं बन जाता, यह भी उनका व्यक्तिगत कानूनी मत है।

मुआवजा इतनी जल्दी कैसे?

पोस्ट में उन्होंने यह प्रश्न भी उठाया कि पीड़ित परिवार को चार लाख बारह हजार रुपये की सहायता राशि अत्यंत शीघ्र जारी कर दी गई, जबकि अन्य मामलों में वर्षों तक सहायता राशि लंबित रहती है,उन्होंने इलाहाबाद हाईकोर्ट के एक निर्णय का हवाला देते हुए मुआवजा वितरण की प्रक्रिया पर भी सवाल उठाए,हालांकि विभिन्न राज्यों में राहत राशि जारी करने के नियम और न्यायिक स्थिति अलग-अलग हो सकती है।

नाबालिग को वाहन देने की जिम्मेदारी

सियाराम साहू ने मोटर वाहन अधिनियम की धारा 199 का उल्लेख करते हुए लिखा कि यदि नाबालिग वाहन चला रहा था तो माता-पिता अथवा वाहन स्वामी की कानूनी जिम्मेदारी भी बनती है, उन्होंने इस पहलू की जांच की भी मांग की।

क्या पुलिस ने जनभावना में अपराध दर्ज किया?

पोस्ट में उन्होंने सबसे गंभीर टिप्पणी यह की कि कहीं ऐसा तो नहीं कि जनभावनाओं और पुलिस परिवार के दबाव के कारण गंभीर धाराएं जोड़ दी गईं, यह उनका व्यक्तिगत आरोप वाला सवाल था,इस संबंध में पुलिस की ओर से ऐसा कोई सार्वजनिक स्वीकारोक्ति या स्पष्टीकरण उपलब्ध नहीं है।

अब मामला न्यायालय में तय होगा...

कानून विशेषज्ञों का मानना है कि किसी भी आपराधिक प्रकरण में प्रेसवार्ता अंतिम सत्य नहीं होती और न ही सोशल मीडिया पोस्ट, अंतिम निर्णय इन बिंदुओं पर निर्भर करेगा सुसाइड नोट की वास्तविक सामग्री क्या है? सीसीटीवी फुटेज क्या दर्शाती है? दुकान में हुई बातचीत के प्रत्यक्ष गवाह कौन हैं? क्या मानसिक उत्पीड़न इतना गंभीर था कि वह आत्महत्या के लिए दुष्प्रेरण की श्रेणी में आए? गिरफ्तारी और विवेचना के दस्तावेज क्या कहते हैं? एससी-एसटी एक्ट की धाराओं के समर्थन में पर्याप्त साक्ष्य हैं या नहीं? इन सभी प्रश्नों का उत्तर केवल न्यायालय में प्रस्तुत साक्ष्यों और गवाहों के परीक्षण के बाद ही सामने आएगा।

CMYK

छत्तीसगढ़ विधानसभा
ध्यानाकर्षण सूचना 167–तथ्यात्मक प्रतितेदन
:: विभागीय टीप ::

जिला मनेन्द्रगढ़ चिरमिरी भरतपुर में वित्तीय वर्ष 2024–25 में मुख्यमंत्री कन्या विवाह योजनान्तर्गत आयोजित सामूहिक विवाह कार्यक्रम के सम्बन्ध में विभाग को शिकायत प्राप्त हुई थी। जिस पर संचालनालय, महिला एवं बाल विकास के पत्र क्र. 10516 दिनांक 08.09.2025 के द्वारा जिला कलेक्टर, जिला मनेन्द्रगढ़ चिरमिरी भरतपुर को जांच कर प्रतिवेदन प्रस्तुत करने हेतु लेख किया गया। कलेक्टर जिला मनेन्द्रगढ़ चिरमिरी भरतपुर द्वारा पत्र क्र. 1710 दिनांक 04.12.2025 के द्वारा प्रकरण पर जांच करते हुए प्रतिवेदन संचालनालय महिला एवं बाल विकास विभाग को प्रेषित किया गया जो कि दिनांक 05.12.2025 को प्राप्त हुआ। यह कथन सत्य नहीं है कि जांच प्रतिवेदन प्राप्त होने के उपरान्त विभाग के द्वारा आज दिनांक तक कोई प्रभावी कार्यवाही नही की गई है अपितु विभाग के द्वारा जिला कलेक्टर से प्राप्त जांच प्रतिवेदन पर तत्काल कार्यवाही करते हुए, 05.01.2026 के द्वारा तत्कालीन जिला महिला एवं बाल विकास अधिकारी को जवाब प्रस्तुत करने हेतु लिखा गया। प्रस्तुत जवाब एवं दस्तावेजों के परीक्षण उपरांत जवाब संतोष जनक नही पाये जाने पर विभागीय जांच संस्थित कर दी गई है। विभागीय जांच पूर्ण होने के उपरांत जिम्मेदार अधिकारी कर्मचारियों के विरुद्ध नियमानुसार कार्यवाही की जावेगी। अतः यह कथन कि विभाग के द्वारा कोई कार्यवाही नही की जा रही है एवं आम जनता एवं महिलाओं में शासन, प्रशासन के प्रति रोष व्याप्त है, सही नहीं है तथा विभाग इस कथन से असहमति व्यक्त करता है।

(लक्ष्मी राजवाड़े)

मुख्यमंत्री कन्या विवाह योजना में नकली मंगलसूत्र विवाद

विधानसभा में गूंजा मामला, विभागीय जांच के आदेश

पहले दो वेतनवृद्धि रोकी गई, अब घिरेगा पूरा मामला!

अब सवाल – क्या होगी आर्थिक और आपराधिक जांच भी?

नकली मंगलसूत्र से 21 लाख की कथित अनियमितता का मामला

विधानसभा में गूंजा,दो वेतन वृद्धि रोकने के बाद अब विभागीय जांच के आदेश...

- पूर्व विधायक गुलाब कमरो की शिकायत,विधायक कविता प्राण लहरे के ध्यानाकर्षण और कलेक्टर जांच के बाद कार्रवाई, अब सवाल–क्या विभागीय जांच से तय होगी पूरी जवाबदेही?
- मुख्यमंत्री कन्या विवाह योजना पर घिरा विभाग,विधानसभा में खुली 21 लाख की कथित अनियमितता की परतें...
- विधानसभा में गूंजा कन्या विवाह योजना का मामला,नकली मंगलसूत्र से लेकर 21 लाख के खर्च तक होगी जांच...
- क्या सिर्फ वेतन वृद्धि रोकना काफी...विधानसभा में उठा मामला,अब विभागीय जांच के आदेश
- कन्या विवाह योजना में कथित गड़बड़ी पर सरकार घिरी, विधानसभा में खुलासा,विभागीय जांच शुरू...
- विधानसभा में उठा मुख्यमंत्री कन्या विवाह योजना का मामला, विभाग बोला...जांच जारी,दोषियों पर होगी कार्रवाई...

-रवि सिंह-

मनेंद्रगढ़,19 जुलाई 2026 (घटती-घटना)। मुख्यमंत्री कन्या विवाह योजना जैसी राज्य सरकार की महत्वाकांक्षी और सामाजिक दृष्टि से अत्यंत संवेदनशील योजना एक बार फिर सुर्खियों में है,जिला मनेंद्रगढ़-चिरमिरी-भरतपुर (एमसीबी) में आयोजित सामूहिक विवाह कार्यक्रम में कथित रूप से नकली अथवा घटिया गुणवत्ता के मंगलसूत्र वितरण और लगभग 21 लाख रुपये के सामग्री क्रय एवं व्यय में अनियमितताओं के आरोपों ने अब राजनीतिक और प्रशासनिक दोनों स्तरों पर गंभीर रूप ले लिया है,मामला पहले शिकायतों तक सीमित था, फिर कलेक्टर जांच तक पहुंचा,उसके बाद संबंधित अधिकारी पर विभागीय दंड लगाया गया और अब विधानसभा में उठने के बाद पूरे मामले में विभागीय जांच के आदेश भी जारी हो चुके हैं,हालांकि घटनाक्रम जितनी तेजी से आगे बढ़ा, उतनी ही तेजी से इस कार्रवाई की गंभीरता पर भी सवाल उठने लगे हैं, विपक्ष जहां इसे अपनी बड़ी सफलता बता रहा है, वहीं कई लोग इसे केवल औपचारिक या 'खानापूर्ति' वाली कार्रवाई मान रहे हैं।

कैसे शुरू हुआ पूरा विवाद?- मुख्यमंत्री कन्या विवाह योजना के तहत 10 फरवरी 2026 को एमसीबी जिले में सामूहिक विवाह समारोह आयोजित किया गया था, इस आयोजन में नवविवाहित जोड़ों को उपहार सामग्री वितरित की गई, कार्यक्रम के बाद शिकायतें सामने आईं कि नववधुओं को दिए गए मंगलसूत्र अपेक्षित गुणवत्ता के नहीं थे,कई लोगों ने इन्हीं 'गिलेट का मंगलसूत्र' अथवा 'नकली मंगलसूत्र' तक बताया, मामला धीरे-धीरे स्थानीय चर्चा से निकलकर राजनीतिक मुद्दा बन गया,इसके साथ ही आरोप लगे कि केवल सामग्री की गुणवत्ता ही नहीं बल्कि खरीद प्रक्रिया और लगभग 21 लाख रुपये के खर्च में भी गंभीर वित्तीय अनियमितताएं हुई हैं।

> **आदित्य शर्मा को नोटिस,जवाब असंतोषजनक पाया गया...**
>
> कलेक्टर की जांच रिपोर्ट के आधार पर तत्कालीन जिला कार्यक्रम अधिकारी आदित्य शर्मा को 18 जून 2026 को कारण बताओ नोटिस जारी किया गया,समय पर जवाब नहीं मिलने पर 3 जुलाई 2026 को स्मरण पत्र भेजा गया,बाद में अधिकारी ने अपना जवाब प्रस्तुत किया,लेकिन विभाग ने उसे संतोषजनक नहीं माना,शासन ने माना कि अधिकारी का आचरण छत्तीसगढ़ सिविल सेवा (आचरण) नियम के नियम-3 के विपरीत है।

पूर्व विधायक गुलाब कमरो ने प्रमुख सचिव से की शिकायत-भरतपुर-सोनहत के पूर्व विधायक गुलाब कमरो ने इस पूरे मामले को प्रमुखता से उठाया,उन्होंने महिला एवं बाल विकास विभाग की प्रमुख सचिव को लिखित शिकायत भेजकर तत्कालीन जिला कार्यक्रम अधिकारी सहित संबंधित अधिकारियों के विरुद्ध निष्पक्ष जांच और कठोर कार्रवाई की मांग की,कमरो का आरोप था कि मुख्यमंत्री कन्या विवाह जैसी गरीब परिवारों से जुड़ी संवेदनशील योजना में गुणवत्ता से समझौता किया गया है, जिससे सरकार की छवि भी प्रभावित हुई है।

दो वार्षिक वेतन वृद्धियां रोकी गईं-महिला एवं बाल विकास विभाग ने 13 जुलाई 2026 को राज्यपाल के नाम से दंडात्मक आदेश जारी किया,आदेश में आदित्य शर्मा की दो वार्षिक वेतन वृद्धि असंचयी प्रभाव से रोकने का निर्णय लिया गया,साथ ही सूरजपुर के जिला कार्यक्रम अधिकारी को निर्देश दिया गया कि इस दंड का उल्लेख उनकी सेवा पुस्तिका में दर्ज कर शासन को सूचित किया जाए।

कलेक्टर जांच के बाद शुरू हुई कार्रवाई- शिकायत मिलने के बाद महिला एवं बाल विकास संचालनालय ने 8 सितंबर 2025 को जिला कलेक्टर, मनेंद्रगढ़-चिरमिरी-भरतपुर को पूरे मामले की जांच कर प्रतिवेदन प्रस्तुत करने के निर्देश दिए, कलेक्टर ने जांच पूरी कर प्रतिवेदन शासन को भेजा। इसके आधार पर विभाग ने संबंधित अधिकारियों से जवाब मांगा।

अब विभागीय जांच भी शुरू-विधानसभा में प्रस्तुत विभागीय टीप में साफ कहा गया है कि विभाग मामले को बंद नहीं कर रहा है,जांच जारी है और दोषियों के विरुद्ध नियमानुसार कार्रवाई की जाएगी, यानी पहले हुई दंडात्मक कार्रवाई के बाद भी पूरा मामला अभी समाप्त नहीं माना गया है।

विधानसभा में गूंजा मामला-इसी बीच विधायक कविता प्राण लहरे ने छत्तीसगढ़ विधानसभा में इस पूरे मामले पर ध्यानाकर्षण सूचना प्रस्तुत की, विधानसभा में महिला एवं बाल विकास विभाग ने तथ्यात्मक प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुए स्वीकार किया कि सामूहिक विवाह कार्यक्रम में सामग्री एवं व्यय संबंधी शिकायत प्राप्त हुई थी, प्रतिवेदन में बताया गया कि शिकायत मिलने के बाद कलेक्टर से जांच कराई गई,जांच प्रतिवेदन प्राप्त किया गया, संबंधित अधिकारी से जवाब मांगा गया,जवाब संतोषजनक नहीं पाया गया,विभागीय जांच शुरू कर दी गई है,जांच पूरी होने के बाद दोषी अधिकारी-कर्मचारियों के विरुद्ध नियमानुसार कार्रवाई की जाएगी।

लेकिन क्या यह कार्रवाई पर्याप्त है?-यहीं से पूरे मामले का सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न सामने आता है, सरकार ने कार्रवाई तो की,लेकिन कार्रवाई का स्वरूप क्या वास्तव में इतना कठोर है कि भविष्य में कोई अधिकारी ऐसी गलती दोहराने से डरे? आदित्य शर्मा का वेतन बंद नहीं किया गया है, केवल दो वार्षिक वेतन वृद्धि असंचयी प्रभाव से रोकी गई हैं,यही कारण है कि प्रशासनिक और राजनीतिक हलकों में इस कार्रवाई को लेकर अलग-अलग राय सामने आ रही है।

विपक्ष इसे अपनी जीत बता रहा-पूर्व विधायक गुलाब कमरो और विपक्षी नेताओं का कहना है कि यदि लगातार शिकायतें नहीं की जाती तो यह मामला दब जाता, उनके अनुसार शिकायत हुई,जांच हुई,नोटिस जारी हुआ, अधिकारी दंडित हुआ,विधानसभा तक मामला पहुंचा, विभागीय जांच शुरू हुई,इस पूरे घटनाक्रम को विपक्ष अपनी राजनीतिक सफलता के रूप में प्रस्तुत कर रहा है।

लेकिन कार्रवाई पर उठ रहे सवाल-दूसरी ओर कई लोग इस कार्रवाई को केवल 'खानापूर्ति' मान रहे हैं,उनका कहना है कि यदि जांच में इतनी गंभीर अनियमितताएं सामने आईं कि राज्यपाल के नाम से दंडादेश जारी करना पड़ा,तो केवल वेतन वृद्धि रोकना क्या पर्याप्त दंड माना जा सकता है? यह भी सवाल उठ रहे हैं क्या केवल विभागीय कार्रवाई से भ्रष्टाचार रुक जाएगा? क्या सामग्री उपलब्ध कराने वाले आपूर्तिकर्ताओं की जवाबदेही तय होगी? यदि सरकारी धन के दुरुपयोग के संकेत मिले हैं तो क्या आपराधिक प्रकरण दर्ज होगा?

क्या सिर्फ लापरवाही थी या आर्थिक अनियमितता भी?- सरकारी दस्तावेजों में कार्रवाई का आधार कर्तव्य के प्रति लापरवाही बताया गया है, लेकिन शिकायतें केवल लापरवाही तक सीमित नहीं थीं, शिकायतों में सामग्री की गुणवत्ता,खरीद प्रक्रिया और लगभग 21 लाख रुपये के व्यय पर भी सवाल उठाए गए थे,यही कारण है कि अब लोगों की अपेक्षा है कि विभागीय जांच केवल सेवा नियमों के उल्लंघन तक सीमित न रहकर पूरे वित्तीय पहलू की भी जांच करे।

सरकार की साख से जुड़ा मामला-मुख्यमंत्री कन्या विवाह योजना आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों की बेटियों के विवाह से जुड़ी महत्वपूर्ण योजना है,यदि ऐसी योजना में घटिया सामग्री वितरण अथवा खरीद प्रक्रिया में अनियमितता के आरोप लगते हैं तो उसका सीधा असर सरकार की विश्वसनीयता पर पड़ता है,विशेषज्ञों का मानना है कि ऐसी योजनाओं में दोषियों के विरुद्ध पारदर्शी और प्रभावी कार्रवाई ही जनता का विश्वास बनाए रख सकती है।

अब निगाहें जांच रिपोर्ट पर-विधानसभा में सरकार ने स्पष्ट कर दिया है कि विभागीय जांच जारी है और जांच पूरी होने के बाद दोषी पाए जाने वाले अधिकारी-कर्मचारियों पर नियमानुसार कार्रवाई की जाएगी,अब पूरे मामले में सबसे बड़ा सवाल यही है कि क्या विभागीय जांच केवल औपचारिकता साबित होगी? क्या 21 लाख रुपये की कथित वित्तीय अनियमितताओं की पूरी सच्चाई सामने आएगी? क्या जिम्मेदार सभी अधिकारियों और संबंधित पक्षों की जवाबदेही तय होगी? और सबसे महत्वपूर्ण, क्या यह कार्रवाई भविष्य में ऐसी घटनाओं को रोकने के लिए पर्याप्त साबित होगी या फिर इसे केवल मामले पर पर्दा डालने वाली कार्रवाई के रूप में देखा जाएगा? इन सवालों के जवाब आने वाली जांच रिपोर्ट और उसके बाद शासन द्वारा उठाए जाने वाले कदमों से ही स्पष्ट होंगे, फिलहाल इतना तय है कि मुख्यमंत्री कन्या विवाह योजना का यह मामला अब केवल एक विभागीय फाइल नहीं,बल्कि विधानसभा के रिकॉर्ड और सार्वजनिक जवाबदेही का विषय बन चुका है।

बारिश में दलदल बना डुमरिया-भैयाथान-केवरा मार्ग,गड्ढों में फंस रही जिंदगी

सड़क नहीं,मौत का रास्ता! डुमरिया-भैयाथान-केवरा मार्ग पर गड्ढों का साम्राज्य,किसान-छात्र और मरीज सबसे ज्यादा बेहाल

20 किलोमीटर की सड़क बनी मुसीबत, गड्ढों और कीचड़ में जूझ रहे हजारों ग्रामीण

लोक निर्माण विभाग की लापरवाही से ग्रामीण त्रस्त, सड़क नहीं बनी कीचड़ का तालाब

ओंकार पाण्डेय

सूरजपुर/भैयाथान,19 जुलाई 2026 (घटती-घटना)। जिले के डुमरिया-भैयाथान-केवरा मार्ग की बदहाली एक बार फिर सरकारी दावों की पोल खोल रही है, बरसात शुरू होते ही करीब 20 किलोमीटर लंबा यह मार्ग कीचड़,जलभराव और गहरे गड्ढों में तब्दील हो गया है, स्थिति इतनी गंभीर है कि सड़क पर चलना किसी जोखिम से कम नहीं रह गया है,खासकर शिवप्रसादनगर पेट्रोल पंप के सामने सड़क की हालत सबसे अधिक खराब है,जहां बारिश का पानी गहरे गड्ढों को पूरी तरह ढक देता है और वाहन चालक बिना गड्ढे देखे दुर्घटना का शिकार हो रहे हैं, ग्रामीणों का आरोप है कि लोक निर्माण विभाग ने मानसून शुरू होने से पहले सड़क की आवश्यक मरम्मत तक नहीं कराई,नतीजतन अब हजारों ग्रामीण, किसान,छात्र,मरीज और व्यापारी प्रतिदिन भारी परेशानी झेल रहे हैं।

शिवप्रसादनगर पेट्रोल पंप के सामने सबसे खराब हाल- ग्राउंड रिपोर्ट के अनुसार,पूरे मार्ग में जगह-जगह बड़े-बड़े गड्ढे बन चुके हैं, लेकिन शिवप्रसादनगर पेट्रोल पंप के सामने की स्थिति सबसे अधिक चिंताजनक है,यहां कई फीट चौड़े और गहरे गड्ढों में बारिश का पानी भर गया है, जिससे सड़क और गड्ढे में अंतर करना मुश्किल हो जाता है,पेट्रोल भरवाने आने वाले वाहन,बसें,ट्रैक्टर और दोपहिया वाहन चालक आए दिन इन गड्ढों में फंस रहे हैं,स्थानीय लोगों का कहना है कि कई बाइक सवार फिसल कर घायल हो चुके हैं।

खरीफ सीजन में किसानों की बढ़ी मुश्किलें- वर्तमान में खरीफ फसल की तैयारी अपने चरम पर है, शिवप्रसादनगर स्थित सेवा सहकारी समिति से प्रतिदिन सैकड़ों किसान खाद,बीज और कृषि सामग्री लेने पहुंच रहे हैं,लेकिन सड़क की बदहाली ने किसानों की परेशानी कई गुना बढ़ा दी है,खाद और बीज से लदे ट्रैक्टर गड्ढों में धंस रहे हैं, जबकि मोटरसाइकिल और साइकिल से सामान ले जाने वाले किसान कीचड़ में गिरकर चोटिल हो रहे हैं, ग्रामीणों का कहना है कि खेती के सबसे महत्वपूर्ण समय में सड़क की यह स्थिति किसानों की मेहनत पर सीधा असर डाल रही है।

स्कूली बच्चों की पढ़ाई भी प्रभावित-यह मार्ग भैयाथान और केवरा क्षेत्र के कई गांवों को जोड़ता है, प्रतिदिन सैकड़ों छात्र-छात्राएं इसी रास्ते से स्कूल और कॉलेज पहुंचते हैं,बारिश के कारण सड़क पर फैले कीचड़ से बच्चों के कपड़े और स्कूल बैग खराब हो रहे हैं, कई बार बच्चे फिसलकर गिर जाते हैं,जिससे अभिभावकों की चिंता भी बढ़ गई है।

मरीजों के लिए बना संकट का रास्ता- ग्रामीणों के अनुसार आपातकालीन स्थिति में मरीजों को अस्पताल पहुंचाना बेहद कठिन हो गया है,एम्बुलेंस को भी गड्ढों और कीचड़ के कारण धीमी गति से चलना पड़ता है, विशेषकर गर्भवती महिलाओं और गंभीर मरीजों को अस्पताल ले जाते समय लगातार झटकों से स्थिति और गंभीर होने का खतरा बना रहता है।

स्थानीय व्यापार पर भी पड़ा असर-सड़क की खराब स्थिति का असर स्थानीय व्यापार पर भी साफ दिखाई दे रहा है,पेट्रोल पंप,ग्रामीण बाजार और अन्य व्यावसायिक प्रतिष्ठानों तक लोगों की आवाजाही प्रभावित हो रही है। माल ढुलाई में देरी हो रही है और परिवहन लागत भी बढ़ रही है।

मानसून से पहले क्यों नहीं हुई मरम्मत?- ग्रामीणों का सबसे बड़ा सवाल यही है कि हर वर्ष बारिश में सड़क की यही स्थिति होती है, फिर भी लोक निर्माण विभाग ने मानसून शुरू होने से पहले गड्ढों की मरम्मत क्यों नहीं कराई? स्थानीय लोगों का कहना है कि यदि समय रहते मुरुम,गिट्टी और पैचवर्क कर दिया जाता तो आज यह स्थिति नहीं बनती,अब लगातार बारिश के बीच स्थायी डामरीकरण संभव नहीं है,जिससे आने वाले कई महीनों तक लोगों को इसी परेशानी का सामना करना पड़ सकता है।

ग्रामीणों की तीन प्रमुख मांगें- क्षेत्रवासियों ने जिला प्रशासन और लोक निर्माण विभाग के सामने तीन प्रमुख मांगें रखी हैं शिवप्रसादनगर पेट्रोल पंप के सामने और अन्य बड़े गड्ढों में तत्काल बोल्डर,गिट्टी और मुरुम डालकर सड़क को चलने योग्य बनाया जाए,जलभराव वाले स्थानों पर तत्काल पानी निकासी की व्यवस्था की जाए,मानसून समाप्त होते ही सड़क के चौड़ीकरण और स्थायी निर्माण कार्य युद्धस्तर पर शुरू किया जाए।

चक्का जाम की चेतावनी-ग्रामीणों,किसानों और पंचायत प्रतिनिधियों ने चेतावनी दी है कि यदि अगले कुछ दिनों में सड़क की मरम्मत शुरू नहीं हुई तो वे मुख्य मार्ग पर चक्काजाम और आंदोलन करने को मजबूर होंगे, उनका कहना है कि वर्षों से वे इस समस्या को सहन कर रहे हैं, लेकिन अब हालात असहनीय हो चुके हैं, यदि प्रशासन ने समय रहते कदम नहीं उठाया तो किसी भी बड़ी दुर्घटना की पूरी जिम्मेदारी संबंधित विभाग और शासन की होगी।

जैस्मीन सैंडलस के साथ देहरादून कॉन्सर्ट में हुई अजीब हरकत

लोगों ने की गलत तरीके से छूने की कोशिश

पंजाबी सिंगर जैस्मीन सैंडलस के देहरादून कॉन्सर्ट में फैंस द्वारा अनुचित व्यवहार का मामला सामने आया है। परफॉर्मेंस के बाद हाथ मिलाते समय भीड़ ने उन्हें गलत तरीके से छूने की कोशिश की, जिसका वीडियो वायरल हो रहा है। पंजाबी सिंगर जैस्मीन सैंडलस इन दिनों देहरादून में हुए अपने एक लेटेस्ट कॉन्सर्ट को लेकर चर्चा में हैं। उनका एक वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो गया है। इस क्लिप ने ऑनलाइन काफी गुस्सा पैदा किया। इसमें दिखाया गया है कि परफॉर्मेंस के बाद जब वह फैंस का अभिवादन करते हुए खुशी से उनसे हाथ मिला रही थीं, तो भीड़ ने उन्हें घेर लिया।

जैस्मिन सैंडलस के वायरल गानें

जैस्मीन ने देहरादून के परेड ग्राउंड में आयोजित एक फ्री कॉन्सर्ट में परफॉर्म किया, जहां उन्हें लाइव देखने के लिए हजारों फैंस जमा हुए थे। शो के दौरान, उन्होंने सिप सिप,शरारत और लवां जैसे अपने कुछ पॉपुलर गानों से दर्शकों का मनोरंजन किया।

जैस्मिन सैंडलस ने मिलाया लोगों से हाथ

हालांकि, परफॉर्मेंस के बाद जो हुआ, उसने सबका ध्यान खींचा। सोशल मीडिया पर शेयर किए गए एक वीडियो में जैस्मीन सैंडलस को दर्शकों के करीब जाते हुए देखा जा सकता है। ऐसा तब हुआ जब सामने की कतार में बैठे फैंस ने उनका उत्साह बढ़ाया, उन्हें गुलाब दिए और हाथ मिलाने के लिए हाथ बढ़ाया। क्लिप पोस्ट करने वाले यूजर के अनुसार, कुछ ने उन्हें गलत तरीके से टच करके अनकंफर्टेबल फील करवाया।

फैंस ने सिंगर को दिया गुलाब

यूजर ने लिखा,मशहूर सिंगर जैस्मीन सैंडलस को देहरादून में परफॉर्म करते समय भीड़ ने घेर लिया और उन्हें गलत तरीके से छूने की कोशिश की। एक गाना खत्म करने के बाद, सामने की लाइन में मौजूद भीड़ ने चीयर किया,उन्हें गुलाब दिए और हाथ मिलाने के लिए हाथ बढ़ाया। गुलाब लेने और फैन्स का अभिवादन करने के लिए वह थोड़ा नीचे आईं, लेकिन कुछ लोगों ने अपनी असलियत दिखाई और उन्हें गलत तरीके से छुआ।
जैसे ही यह वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुआ,कई यूजर्स ने सिंगर को सपोर्ट किया और क्लिप में दिखे कथित व्यवहार की निंदा की।

अभिनव शुक्ला ने एडल्ट कंटेंट पर रखी अपनी राय

रुबीना दिलैक और हिना खान ने अपने पतियों अभिनव शुक्ला और रॉकी जायसवाल के साथ हाल ही में अपना पॉडकास्ट द 4 पीओव्ही शुरू किया है,जिसमें ये चारों कई तरह के सोशल और लाइफ़स्टाइल विषयों पर चर्चा करते हैं। हाल के एक एपिसोड में, ग्रुप ने एक्ट्रेस दीया मिर्ज़ा की क्लाइमेट चेंज पर हालिया टिप्पणी के बारे में बात की। दीया के इस दावे ने ऑनलाइन बहस छेड़ दी थी कि क्लाइमेट संकट के लिए पितृसत्ता और पुरुष काफी हद तक ज़िम्मेदार हैं।
अभिनव शुक्ला का कहना है कि पोर्न देखने से ग्लोबल वार्मिंग बढ़ती है चर्चा के दौरान, अभिनव ने एक ऐसी बात कही जिससे उनकी पत्नी रुबीना हैरान रह गईं। इस मुद्दे पर अपना नज़रिया बताते हुए अभिनव ने कहा, ग्लोबल वार्मिंग के कई कारणों में से एक बड़ा कारण पोर्न देखना है। अपनी बात को समझाते हुए उन्होंने आगे कहा, पोर्न बनाने और उसे दुनिया भर में प्रसारित करने में बहुत ज़्यादा ऊर्जा खर्च होती है।

आंखों में थकान और दुबला-पतला शरीर...सलमान खान का वायरल वीडियो देख चिंता में डूबे फैंस,सेहत को लेकर उठे सवाल

सोशल मीडिया परसलमान खान के हालिया आउटिंग के कई वीडियो सामने आए हैं,लेकिन उनके लुक ने ही सबसे ज्यादा चर्चा बटोरी

मुंबई में सुपरस्टार सलमान खान के हालिया पब्लिक अपीयरेंस ने फैंस को चिंता में डाल दिया है;एक्टर का काफी दुबला-पतला शरीर ऑनलाइन चर्चा का मुख्य विषय बन गया है। जब उनके बाहर निकलने के वीडियो और तस्वीरें वायरल हुईं,तो कई सोशल मीडिया यूजर्स ने एक्टर की सेहत को लेकर चिंता जताई। बहुत से लोग यह सोच रहे हैं कि उनका वजन इतना कम क्यों हो गया है और उम्मीद कर रहे हैं कि वे ठीक हों।

सलमान खान को देख फैंस को हुई चिंता

सलमान खान की सेहत चर्चा का विषय बनी शुक्रवार को सलमान ने स्लम रिहैबिलिटेशन अथॉरिटी के ऑफिस का दौरा किया, जहां उन्होंने अथॉरिटी के अत्याधुनिक डेटा कलेक्शन और वेरिफिकेशन सपोर्ट सेंटर का उद्घाटन किया। इस इवेंट के दौरान,एक्टर ने लाभार्थियों को घरों की चाबियां भी सौंपीं।
सलमान के दौरे के कई वीडियो सोशल मीडिया पर सामने आए हैं, लेकिन उनके शारीरिक रूप-रंग ने सबसे ज्यादा ध्यान खींचा और चर्चा का विषय बन गया। एक्टर के शारीरिक रूप को देखकर फैंस और शुभचिंतकों ने चिंता जताई;

कई लोगों ने सोशल मीडिया पर चिंता भरे मैसेज शेयर किए और जानना चाहा कि क्या उनकी सेहत ठीक है। एक ने लिखा,वह बीमार लग रहे हैं...भगवान आपका भला करे, वहीं दूसरे ने कहा,वह बीमार लग रहे हैं,मुझे लगता है कि उन्हें कोई स्वास्थ्य संबंधी समस्या है। एक ने पूछा, मेरे किंग को क्या हुआ है?
एक ने लिखा, सलमान खान को क्या हो गया? पहले तो मुझे लगा कि यह वो नहीं हैं, लेकिन मैंने वहां शेरा को भी देखा। उनकी उम्र धर्मेंद्र जैसी लग रही है। एक कमेंट में ऐसा लिखा था, तो वहीं एक और कमेंट था,क्या वो सलमान खान हैं? क्या उनकी तबीयत ठीक नहीं है? ओह माय गॉड।

फैंस ने किया भाईजान का बचाव

हालांकि, कुछ फैन्स उनके बचाव में भी आए और लिखा,किसी भारतीय फिल्म सुपरस्टार के लिए सबके सामने अपनी उम्र को जाहिर करना बहुत हिम्मत का काम है। रजनीकांत ने ऐसा किया था। बॉलीवुड में कैमरे के सामने अपनी उम्र को शालीनता से स्वीकार करने की हिम्मत दिखाने के लिए सलमान खान बहुत सम्मान के हकदार हैं

सलमान खान का वर्कफ्रंट

सलमान जल्द ही मातृभूमि में नजर आएंगे, जिसमें बड़े बदलाव किए जा रहे हैं। मार्च तक इस फिल्म का नाम बैटल ऑफ गलवान था और कहा जा रहा था कि यह गलवान घाटी में भारतीय और चीनी सेनाओं के बीच हुई असल झड़प पर आधारित है। लेकिन अब इस प्रोजेक्ट ने एक अलग मोड़ ले लिया है इसका नाम बदल दिया गया है,चीन और गलवान घाटी के जिक्र को हटा दिया गया है,और कहा जा रहा है कि टीम बड़े पैमाने पर दोबारा शूटिंग कर रही है। सलमान खान फिल्म्स के बैनर तले सलमा खान द्वारा प्रोड्यूस और अपूर्व लाखिया द्वारा निर्देशित फिल्म मातृभूमि में सलमान एक इंडियन आर्मी कर्नल के रोल में हैं। इसमें चित्रांगदा सिंह भी हैं। अभी तक इसकी रिलीज डेट का ऐलान नहीं किया गया है।

कुंचाको बोबन का धांसू अंदाज : थ्रिलर से भरपूर है उन्माधम का ट्रेलर

डायरेक्टर किरण दास की बहुप्रतीक्षित मलयालम इन्वेस्टिगेटिव हॉरर थ्रिलर फिल्म उन्माधम का ऑफिशियल ट्रेलर रिलीज़ हो गया है। इस फिल्म में कुंचाको बोबन और लिजोमोल जोस मुख्य भूमिकाओं में हैं। ट्रेलर रिलीज़ होने से फैंस और फिल्म प्रेमियों में खुशी की लहर दौड़ गई है।

प्रोडक्शन हाउस टी-सीरीज़ फिल्म्स ने अपने सोशल मीडिया अकाउंट्स पर हाल ही में रिलीज हुए ट्रेलर का लिंक शेयर किया। उन्होंने लिखा,हर दबी हुई सच्चाई अपनी आवाज़ ढूंढ ही लेती है। पेश है सउन्माधम का ऑफिशियल ट्रेलर। 31 जुलाई, 2026 को सिनेमाघरों में। उन्माधम का ट्रेलर अब उपलब्ध है, लिंक बायो में है। पैनोरमा स्टूडियोज़ वर्ल्ड वाइड रिलीज़। ट्रेलर की शुरुआत कुंचाको बोबन से होती है, जो एक पुलिस ऑफिसर हैं और अपने सीनियर से कोंगाड स्टेशन के एक खास 174 केस के बारे में पूछते हैं। उनके सीनियर उन्हें केस फाइल निकालकर देखने के लिए कहते हैं। हालांकि, कुंचाको बोबन कहते हैं कि उस फाइल को छूने से भी हर कोई डरता है। इसके बाद, जब उनकी बातचीत वॉयस-ओवर के रूप में जारी रहती है,तो दर्शकों को कुछ डरावने और रहस्यमयी दृश्य दिखाए जाते हैं। सीनियर बताते हैं कि किसी केस में पुलिस सबसे पहले यही सवाल पूछती है-कौन,कब,कहाँ,कैसे और क्यों। वे बताते हैं कि इस केस में इन सवालों के किसी भी जवाब से कोई शक पैदा नहीं हुआ था। इसके बाद ट्रेलर में कुंचाको बोबन और लिजोमोल जोस के बीच बातचीत दिखाई जाती है। वह उनसे पूछती हैं, क्या आपने ही यह नहीं कहा था कि जो कोई भी इस केस की गहराई में जाने की कोशिश करता है,वह मुसीबत में पड़ जाता है? उनकी बातचीत से दर्शकों को यह भी पता चलता है कि यह केस छह साल पहले हुआ था और तथ्यों को साबित करना मुश्किल होगा। ट्रेलर से यह भी पता चलता है कि कुंचाको बोबन ने फाइल खोल ली है और अगर किसी सीनियर को पता चल गया कि उन्होंने इसे छुआ है,तो वे स्टेशन पर अपनी नौकरी जारी नहीं रख पाएंगे।

आंखें ही सब कह देतीं.,यश को सीता के रोल में पसंद आईं साई पल्लवी,रणबीर के लिए कहा-जादू कर दिया

रामायण में रावण का किरदार निभाने वाले यश ने रणबीर कपूर और साई पल्लवी की परफॉर्मेंस को लेकर बात की है। मोस्ट एंटीसिपेटेड फिल्म रामायण रिलीज से पहले ही फिल्मी गलियारों में धूम मचा रही है। हाल ही में दिल्ली में रामायण का प्रथम संकल्प इवेंट होस्ट हुआ, जहां फिल्म की स्टार कास्ट ने शिरकत की।इस इवेंट में रणबीर कपूर , साई पल्लवी , रवि दुबे रकुल प्रीत सिंह, सनी देओल और यश समेत स्टार कास्ट ने शिरकत की। इस इवेंट में रावण बने यश) ने फिल्म का हिस्सा बनने पर खुशी जताई।

रामायण पर क्या बोले यश?

मीडिया के साथ बातचीत में प्रोड्यूसर-एक्टर यश ने कहा कि रामायण का मकसद प्रभु श्री राम की कहानी ग्लोबल ऑडियंस को सुनाना और अपने देश में भी उनका जश्न मनाना है। इसके अलावा अभिनेता ने रणबीर कपूर और साई पल्लवी की भी तारीफ की।

रणबीर-यश की तारीफों के बांधे पुल

यश ने कहा कि रणबीर ने राम की भूमिका में जान डाल दी। साथ ही कहा कि साई की आंखें ही काफी हैं, बातें करने के लिए। उन्होंने कहा, रणबीर,आपने कमाल का काम किया है। पूरा देश समझेगा कि आपने किस तरह खुद को समर्पित किया और क्या जादू रचा है। साई तो जाहिर है, एक शानदार एक्ट्रेस हैं। जब वह सीता का रोल निभाती हैं तो उनकी आंखें ही सब कुछ कह देती हैं।÷

फिल्म में होंगे कई सरप्राइज

इसी इवेंट में यश ने सूर्पनखा के रोल में रकुल प्रीत सिंह, विवेक ओबरॉय और रवि दुबे की भी तारीफ की। उन्होंने कहा कि फिल्म में कई सरप्राइज पैकेज हैं जो धमाल मचा देंगे।

कब रिलीज होगी रामायण?

मालूम हो कि नमित मल्होत्रा निर्मित रामायण का निर्देशन नितेश तिवारी कर रहे हैं। फिल्म को दो हिस्सों में रिलीज किया जा रहा है। पहला पार्ट इसी साल दीवाली पर रिलीज होगा और दूसरा पार्ट अगले साल आएगा।

खेल समाचार

फाइनल का जुनून, केरल में छुट्टी का ऐलान

त्रिवेंद्रम,,19 जुलाई 2026। फुटबॉल के प्रति अपनी दीवानगी के लिए मशहूर केरल में फीफा वर्ल्ड कप 2026 के फाइनल मुकाबले को लेकर जबरदस्त उत्साह देखने को मिल रहा है। स्पेन और अर्जेंटीना के बीच खेले जाने वाले खिताबी मुकाबले को देखने के लिए केरल सरकार ने बड़ा फैसला लेते हुए सोमवार को राज्य के सभी शिक्षण संस्थानों में छुट्टी की घोषणा कर दी है। केरल सरकार के इस फैसले के बाद आम शिक्षा विभाग और उच्च शिक्षा विभाग के अंतर्गत आने वाले स्कूल,कॉलेज, विश्वविद्यालय और पेशेवर शिक्षण संस्थान बंद रहेंगे। सरकार ने यह निर्णय फुटबॉल प्रशंसकों और छात्रों की मांग को देखते हुए लिया है,ताकि वे दुनिया के सबसे बड़े फुटबॉल मुकाबले का आनंद बिना किसी परेशानी के उठा सकें।
फीफा वर्ल्ड कप 2026 का फाइनल मुकाबला भारत में देर रात खेला जाएगा। भारतीय समयानुसार मैच रात 12:30 बजे शुरू होगा और इसके देर रात तक चलने की संभावना है। ऐसे में छात्रों को अगले दिन सुबह जल्दी कक्षाओं में पहुंचने में परेशानी हो सकती थी। इसी को ध्यान में रखते हुए सरकार ने छुट्टी का फैसला लिया। केरल में फुटबॉल केवल एक खेल नहीं बल्कि लोगों की भावनाओं से जुड़ा हुआ है। राज्य के शहरों से लेकर गांवों तक फुटबॉल को लेकर जबरदस्त उत्साह देखने को मिलता है। फीफा वर्ल्ड कप जैसे बड़े टूर्नामेंट के दौरान यहां का माहौल पूरी तरह बदल जाता है। जगह-जगह बड़ी स्क्रीन लगाकर मैच देखने की व्यवस्था की जाती है और प्रशंसक अपनी पसंदीदा टीमों के समर्थन में जश्न मनाते नजर आते हैं। फीफा वर्ल्ड कप के दौरान केरल में अंतरराष्ट्रीय फुटबॉल सितारों के बड़े पोस्टर, कटआउट और टीमों के झंडे सड़कों और मैदानों पर दिखाई देते हैं। खासकर अर्जेंटीना और स्पेन जैसी टीमों के लिए राज्य में बड़ी संख्या में प्रशंसक मौजूद हैं। यही कारण है कि फाइनल मुकाबले को लेकर लोगों में खास उत्साह देखा जा रहा है। केरल के मुख्यमंत्री वी डी सतीशन और राज्य सरकार के मंत्रियों को सोशल मीडिया पर कई फुटबॉल प्रशंसकों ने मैच देखने के लिए छुट्टी की मांग की थी। इसके बाद सरकार ने छात्रों की भावनाओं को ध्यान में रखते हुए यह फैसला लिया।
केरल के उच्च शिक्षा मंत्री रोजी एम जॉन ने घोषणा करते हुए कहा कि पेशेवर कॉलेज और अन्य उच्च शिक्षा संस्थानों में सोमवार को अवकाश रहेगा। उन्होंने बताया कि सरकार चाहती है कि छात्र फुटबॉल के इस ऐतिहासिक मुकाबले को आसानी से देख सकें। वहीं,आम शिक्षा मंत्री एन शम्सुद्दीन ने भी सोशल मीडिया पोस्ट के जरिए छुट्टी की जानकारी दी। उन्होंने छात्रों को संबोधित करते हुए लिखा, बच्चों अब खुश हो ना? उन्होंने कहा कि सरकार ने फुटबॉल प्रेमी छात्रों की भावनाओं का सम्मान करते हुए यह कदम उठाया है। फाइनल मुकाबले को लेकर केरल में कई स्थानों पर विशेष स्क्रीनिंग की तैयारी की गई है।

गोल्डन बूट की रेस के बीच एमबाप्पे ने मेसी को लेकर की बड़ी भविष्यवाणी

मियामी,19 जुलाई 2026। फ्रांस के कप्तान किलियन एम्बाप्पे ने भविष्यवाणी की है कि अर्जेंटीना के कप्तान और PSG में उनके पूर्व साथी लियोनेल मेस्सी रविवार (स्थानीय समय) को FIFA वर्ल्ड कप फ़ाइनल में स्पेन के खिलाफ़ कम से कम एक गोल करेंगे। तीसरे स्थान के मैच में इंग्लैंड से 6-4 से हारने के बाद एम्बाप्पे का वर्ल्ड कप अभियान खत्म हो गया। हालांकि,फ्रांसीसी कप्तान 2026 वर्ल्ड कप में सबसे ज़्यादा गोल करने वालों की सूची में 10 गोल के साथ सबसे आगे हैं,जो मेस्सी से दो गोल ज़्यादा है,जिन्होंने आठ गोल किए हैं। जब दोनों खिलाड़ी गोल्डन बूट के लिए मुकाबला कर रहे हैं, तो एम्बाप्पे ने फॉक्स स्पोर्ट्स से कहा,लियो,वह हर समय गोल करते हैं। कल वह निश्चित रूप से गोल करेंगे। तीसरे स्थान के मैच में इंग्लैंड के खिलाफ़ हार पर बात करते हुए, एम्बाप्पे ने कहा कि वह उतने ही मैचों में 22 गोल के साथ वर्ल्ड कप इतिहास में सबसे ज़्यादा गोल करने वाले खिलाड़ी बनने के बजाय स्पेन के खिलाफ़ फ़ाइनल में खेलना पसंद करते।

सिंधु ने रचा इतिहास,जापान ओपन खिताब पर कब्जा

टोकियो,19 जुलाई 2026। भारतीय बैडमिंटन स्टार पीवी सिंधु ने आखिरकार लंबे इंतजार के बाद बड़ा खिताब अपने नाम कर लिया है। उन्होंने जापान ओपन 2026 का खिताब जीतकर अपने करियर में एक और बड़ी उपलब्धि जोड़ दी। चार साल से चले आ रहे खिताबी सूखे को खत्म करने के बाद सिंधु बेहद भावुक नजर आईं। उन्होंने अपनी इस शानदार जीत को ओडिशा की पवित्र भगवान जगन्नाथ रथयात्रा से जोड़ते हुए इसे बेहद खास और दिव्य अनुभव बताया।
जापान ओपन के फाइनल मुकाबले में पीवी सिंधु का सामना जापान की स्टार खिलाड़ी अकाने यामागुची से हुआ। सिंधु ने शानदार खेल का प्रदर्शन करते हुए यामागुची को सीधे गेम में 21-17, 21-17 से हराकर खिताब अपने नाम कर लिया। यह सिंधु का जापान ओपन में पहला खिताब है। इस जीत के साथ उन्होंने आलोचकों को भी करारा जवाब दिया, जो पिछले कुछ समय से उनके प्रदर्शन को लेकर सवाल उठा रहे थे।

सिंधु के लिए यह जीत सिर्फ एक ट्रॉफी नहीं बल्कि आत्मविश्वास वापस पाने का बड़ा मौका भी है। पिछले कुछ वर्षों में वह कई बड़े टूर्नामेंटों में संघर्ष करती नजर आई थीं। चोट और फॉर्म में उतार-चढ़ाव के कारण उन्हें खिताबी सफलता का इंतजार करना पड़ा। आखिरी बार उन्होंने साल 2022 में सिंगापुर ओपन का खिताब जीता था। इसके बाद बड़े स्तर की प्रतियोगिताओं में उन्हें जीत के लिए लंबा इंतजार करना पड़ा। जापान ओपन जीतने के बाद सिंधु को देशभर से बधाइयां मिल रही हैं। ओडिशा के पूर्व मुख्यमंत्री नवीन पटनायक ने भी उन्हें इस शानदार उपलब्धि के लिए शुभकामनाएं दीं। उन्होंने सोशल मीडिया के जरिए सिंधु की तारीफ करते हुए कहा कि उन्होंने शानदार प्रदर्शन कर देश का नाम रोशन किया है और भविष्य में भी बड़ी सफलताओं की कामना की।
नवीन पटनायक के संदेश का जवाब देते हुए पीवी सिंधु ने भावुक प्रतिक्रिया दी। उन्होंने कहा कि यह जीत उनके लिए और भी खास इसलिए बन गई है क्योंकि यह भगवान जगन्नाथ की पवित्र रथयात्रा के समय मिली है। सिंधु ने अपनी सफलता को महाप्रभु जगन्नाथ का आशीर्वाद बताया और कहा कि इस समय मिली जीत उनके लिए किसी दिव्य अनुभव से कम नहीं है। सिंधु ने यह भी कहा कि वह जल्द ही पुरी जाकर भगवान जगन्नाथ मंदिर में दर्शन करना चाहती हैं और रथयात्रा के उत्सव को करीब से महसूस करना चाहती हैं। उन्होंने अपनी जीत को भगवान जगन्नाथ को समर्पित करते हुए इसे जीवन के यादगार पलों में से एक बताया।

असम प्रीमियर लीग ऑक्शन में डेनिश दास सबसे महंगे खिलाड़ी,12.60 लाख रुपये में बिके

गुवाहाटी,19 जुलाई 2026। असम प्रीमियर लीग प्लेयर ऑक्शन के मार्की प्लेयर राउंड में डेनिश दास सबसे महंगे खिलाड़ी साबित हुए। रविवार को गुवाहाटी में हुई रोमांचक बोली के बाद बरपेटा ब्रेव्स ने उन्हें 12.60 लाख रुपये में अपनी टीम में शामिल किया। प्रेस रिलीज़ के अनुसार,मार्की खिलाड़ियों में सुमित घडीगांवकर दूसरे सबसे महंगे खिलाड़ी रहे,जिन्हें चाराइदेव सनराइजर्स ने 12.20 लाख रुपये में खरीदा,जबकि असम के अनुभवी बल्लेबाज़ सिबशंकर रॉय को बराक लीजेंड्स ने 12 लाख रुपये में अपनी टीम में शामिल किया। आयुष्मान मलाकर और स्वरूपम पुरकायस्थ टॉप पांच मार्की खिलाडियों की सूची में शामिल रहे; तेज़पुर टाइटन्स और जोरहाट स्टैलियन्स ने उन्हें क्रमशः 11.80 लाख रुपये में खरीदा।

CMYK

50 लाख का लीगल नोटिस या सवालों से बचने की कोशिश?

विशेष रिपोर्ट

अंबिकापुर/रायपुर,19 जुलाई 2026 (घटती-घटना)। लोकतंत्र में पत्रकारिता की भूमिका केवल सरकारी प्रेस विज्ञप्तियां प्रकाशित करना नहीं है,बल्कि जनहित से जुड़े मामलों में सवाल पूछना भी है,विशेषकर तब, जब मामला सरकारी नियुक्तियों,वरिष्ठता,पदोन्नति और प्रशासनिक पारदर्शिता से जुड़ा हो,खाद्य एवं औषधि प्रशासन विभाग में वर्ष 2015 की सीधी भर्ती, वर्ष 2016 की नियुक्तियों,वरिष्ठता सूची और पदोन्नति को लेकर प्रकाशित समाचारों के बाद दैनिक घटती-घटना के संपादक को 25 जून 2026 को 50 लाख रुपये की मानहानि का कानूनी नोटिस भेजा गया है,नोटिस में समाचारों को मानहानिकारक बताते हुए उन्हें हटाने, सार्वजनिक माफी प्रकाशित करने और 50 लाख रुपये क्षतिपूर्ति देने की मांग की गई है,लेकिन यह नोटिस जितना पढ़ा जाता है,उससे कहीं अधिक नए प्रश्न सामने आते हैं,ये प्रश्न केवल नोटिस तक सीमित नहीं हैं,बल्कि पूरी नियुक्ति प्रक्रिया, शिकायतों,जांच,विभागीय पारदर्शिता और पत्रकारिता की संवैधानिक भूमिका से जुड़े हैं।

पहला सवाल-क्या खबर किसी व्यक्ति पर थी या पूरी नियुक्ति प्रक्रिया पर?

सबसे पहले यह समझना जरूरी है कि प्रकाशित समाचारों का विषय किसी अधिकारी का निजी जीवन नहीं था,समाचारों में प्रश्न उस नियुक्ति प्रक्रिया पर उठाए गए थे जिसके आधार पर विभाग में नियुक्ति हुई,बाद में वरिष्ठता तय हुई और फिर पदोन्नति दी गई,समाचारों में प्रकाशित नाम किसी निजी स्रोत से प्राप्त नहीं थे,बल्कि उसी विभागीय सूची का हिस्सा थे जिस पर सवाल उठाए गए थे,ऐसे में प्रश्न यह उठता है कि यदि पूरी सूची पर सवाल था,तो उसे केवल दो अधिकारियों की व्यक्तिगत मानहानि के रूप में क्यों प्रस्तुत किया गया? क्या पूरी भर्ती प्रक्रिया पर सवाल उठाना और उसमें शामिल नामों का उल्लेख करना स्वतः किसी व्यक्ति को बदनाम करना माना जाएगा, या यह सार्वजनिक अभिलेखों पर आधारित रिपोर्टिंग का हिस्सा हो सकता है?

दूसरा सवाल - क्या नियुक्ति प्रक्रिया को लेकर शिकायतें हुई थी?-

यह पूरे विवाद का सबसे महत्वपूर्ण बिंदु है, क्या वर्ष 2015 की भर्ती और वर्ष 2016 की नियुक्तियों को लेकर विभाग के समक्ष शिकायतें प्रस्तुत की गई थी? यदि शिकायतें हुई थीं, तो उन्हें किस अधिकारी ने प्राप्त किया? क्या उन शिकायतों पर कोई प्रारंभिक जांच हुई? क्या किसी सक्षम अधिकारी ने तथ्य परीक्षण कराया? यदि जांच हुई तो उसका निष्कर्ष क्या रहा? यदि शिकायतें पूरी तरह निराधार थीं,तो क्या विभाग ने कभी सार्वजनिक रूप से यह कहा कि सभी नियुक्ति नियमों के अनुरूप हैं? यदि जांच अभी भी लंबित है, तो उसका वर्तमान स्वरूप क्या है? इन प्रश्नों का उत्तर नोटिस में नहीं मिलता।

पांचवां सवाल - समाचार का कौन-सा तथ्य गलत था?- नोटिस में समाचारों को मानहानिकारक बताया गया है, लेकिन एक महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि समाचार की कौन-सी पंक्ति तथ्यात्मक रूप से गलत थी? क्या किसी दस्तावेज का गलत उल्लेख किया गया? क्या किसी आदेश का गलत उद्धरण दिया गया? क्या किसी न्यायालय के आदेश को गलत तरीके से प्रस्तुत किया गया? या आपत्ति केवल इस बात पर है कि समाचार में संबंधित अधिकारियों के नाम प्रकाशित हुए? यदि तथ्य गलत हैं, तो उनका बिंदुवार खंडन भी सार्वजनिक होना चाहिए।

तीसरा सवाल - यदि जांच हुई तो उसकी रिपोर्ट कहां है?

प्रशासनिक व्यवस्था में किसी भर्ती की नियुक्ति पर शिकायत होने के बाद सामान्यतः तथ्य परीक्षण या जांच की प्रक्रिया अपनाई जाती है, यदि इस मामले में भी ऐसा हुआ, तो जांच अधिकारी कौन थे? किस स्तर पर जांच हुई? क्या संबंधित अभिलेखों का परीक्षण हुआ? क्या सभी उम्मीदवारों के दस्तावेज पुनः देखे गए? क्या कोई जांच प्रतिवेदन तैयार हुआ? यदि हुआ, तो क्या वह सार्वजनिक किया गया? यदि जांच में सब कुछ सही पाया गया, तो वही रिपोर्ट सबसे मजबूत उत्तर हो सकती थी, फिर सवाल उठता है कि जांच रिपोर्ट के बजाय सीधे मानहानि का नोटिस क्यों?

चौथा सवाल - क्या अधिवक्ता ने मूल अभिलेखों का परीक्षण किया?-

नोटिस में विस्तार से लिखा गया है कि संबंधित अधिकारी वर्ष 2015 की सीधी भर्ती परीक्षा से चयनित हुए,विस्तृत दस्तावेज सत्यापन के बाद वर्ष 2016 में नियुक्ति मिली और बाद में नियमों के अनुसार पदोन्नति प्राप्त हुई,लेकिन यह स्पष्ट नहीं है कि क्या अधिवक्ता ने स्वयं मूल चयन सूची, आवेदन पत्र,पात्रता प्रमाणपत्र,दस्तावेज सत्यापन रिकॉर्ड,नियुक्ति फाइल,विभागीय टिप्पणियां देखें? या यह विवरण केवल मुवक्किल से प्राप्त जानकारी के आधार पर नोटिस में शामिल किया गया? यदि दस्तावेज इतने स्पष्ट हैं, तो उन्हें सार्वजनिक करने में संकोच क्यों?

छठा सवाल - 9 वर्ष बाद पदोन्नति का उल्लेख स्वयं नोटिस में...

नोटिस में स्वयं उल्लेख है कि संबंधित अधिकारी वर्ष 2016 से सेवा में थे और उन्हें लगभग नौ वर्ष बाद वर्ष 2025 और 2026 में पदोन्नति मिली,साथ ही सेवा नियमों का हवाला दिया गया है कि 5 वर्ष और 7 वर्ष की सेवा पूर्ण होने पर पदोन्नति की पात्रता बनती है,यह प्रश्न भी उठता है कि यदि पात्रता पहले बन गई थी और पदोन्नति बाद में हुई,तो क्या इस विषय पर विभागीय स्तर पर कोई प्रशासनिक कारण दर्ज था? यदि था,तो क्या वह भी सार्वजनिक रिकॉर्ड का हिस्सा है?

सातवां सवाल - क्या विभाग ने खबरों का संज्ञान लिया?

जब लगातार समाचार प्रकाशित हुए, तब क्या विभाग ने उनका संज्ञान लिया? क्या विभाग ने कहा कि समाचार गलत हैं? क्या किसी अधिकारी ने प्रेस नोट जारी किया? क्या किसी जांच समिति का गठन हुआ? क्या संबंधित मंत्रालय नियंत्रक कार्यालय ने कोई स्पष्टीकरण जारी किया? यदि नहीं,तो क्यों?

आठवां सवाल - पत्रकार पर लगाए गए गंभीर आरोपों का आधार क्या है?

नोटिस में पत्रकार पर दुर्भावना,पत्रकारिता के नैतिक मानकों के उल्लंघन,यहां तक कि 'धन-आधारित पत्रकारिता' और कुछ व्यक्तियों से मिलीभगत जैसे गंभीर आरोप लगाए गए हैं, यदि ऐसे आरोप लगाए गए हैं, तो क्या उनके समर्थन में कोई दस्तावेज, कोई शिकायत, कोई जांच या कोई साक्ष्य भी है? यदि है,तो उसे सार्वजनिक किया जाना चाहिए।

नौवां सवाल - क्या सरकारी अधिकारी व्यक्तिगत रूप से नोटिस भेज सकते हैं?

नोटिस भेजने वाले दोनों व्यक्ति वर्तमान में शासकीय सेवा में कार्यरत अधिकारी हैं,यह प्रश्न भी चर्चा का विषय है कि यह नोटिस पूरी तरह उनकी व्यक्तिगत क्षमता में भेजा गया है या किसी विभागीय अनुमति अथवा विधिक परामर्श की औपचारिक प्रक्रिया के बाद,यदि यह निजी मानहानि का दावा है,तो यह उनका संवैधानिक अधिकार है। यदि इसमें विभागीय अभिलेखों और आधिकारिक पद का व्यापक उपयोग हुआ है,तो उसकी प्रकृति पर भी स्पष्ट आवश्यक है।

दसवां सवाल - पत्रकार सवाल पूछे या नहीं?

यदि किसी सरकारी भर्ती,नियुक्ति,वरिष्ठता या पदोन्नति को लेकर शिकायत होती है...यदि मामला न्यायालय तक पहुंचता है...यदि विभागीय आदेशों और अभिलेखों पर प्रश्न उठते हैं...तो क्या पत्रकार उन पर सवाल पूछे या नहीं? भारतीय संविधान का अनुच्छेद 19(1)(ए) अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की गारंटी देता है। यह स्वतंत्रता निरंकुश नहीं है,लेकिन जनहित से जुड़े मामलों पर तथ्यपरक रिपोर्टिंग और प्रश्न पूछना लोकतांत्रिक व्यवस्था का महत्वपूर्ण हिस्सा माना जाता है। साथ ही, प्रतिष्ठा की रक्षा का अधिकार भी महत्वपूर्ण है। ऐसे मामलों में संतुलन का निर्धारण अंततः तथ्यों और कानून के आधार पर होता है।

सबसे बड़ा सवाल अभी भी बाकी है...

इस पूरे विवाद का सबसे बड़ा प्रश्न अभी भी अनुत्तरित है क्या नियुक्ति प्रक्रिया पर उठे सवालों का जवाब दस्तावेजों,जांच रिपोर्ट और तथ्यात्मक स्पष्टीकरण से दिया जाएगा,या केवल मानहानि के नोटिसों के माध्यम से? यदि नियुक्तियां पूरी तरह नियमों के अनुरूप हैं, तो विभागीय रिकॉर्ड,जांच प्रतिवेदन और आधिकारिक स्पष्टीकरण सार्वजनिक होने चाहिए,इससे न केवल संबंधित अधिकारियों की प्रतिष्ठा मजबूत होगी,बल्कि जनसामान्य का विश्वास भी बढ़ेगा, दूसरी ओर,यदि पत्रकारिता ने कोई तथ्यात्मक त्रुटि की है,तो उसका उत्तर भी तथ्यों और दस्तावेजों के माध्यम से सामने आना चाहिए। यही लोकतंत्र विमर्श का स्वस्थ तरीका है।

कांग्रेस नेता श्याम कश्यप को मारने 5-5 लाख में दी गई थी सुपारी,मास्टरमाइंड ने कहा था...'यही है टारगेट,कर दो...

बिलासपुर,19 जुलाई 2026। शहर के पॉश इलाके में 14 दिन पहले कांग्रेस नेता श्याम कश्यप पर हुए जानलेवा हमले की गुत्थी पुलिस ने सुलझा ली है। यह कोई आम विवाद या अचानक हुई घटना नहीं थी, बल्कि एक सुनियोजित 'सुपारी किलिंग' का खौफनाक प्रयास था। हत्या के लिए हमलावरों को 5-5 लाख रुपए का लालच दिया गया था। तारबहार थाना पुलिस ने इस वारदात को अंजाम देने वाले दो आरोपियों को गौरेला-पेंड्रा-मरवाही (जीपीएम) जिले से गिरफ्तार कर लिया है। वहीं, इस पूरी खूनी साजिश का मास्टरमाइंड दीपक तिवारी और उसका एक साथी अब भी फरार हैं।

सीसीटीवी और एक बाइक के नंबर ने खोला राज : बीती 4 जुलाई की सुबह करीब 7 बजे कांग्रेस नेता श्याम कश्यप रोज की तरह रेलवे अस्पताल के पास मॉर्निंग वॉक पर निकले थे। तभी वहां पहले से घात लगाए बैठे तीन नकाबपोश बदमाशों ने उन्हें घेर लिया। गालियां देते हुए आरोपियों ने लाठी-डंडों और धारदार हथियारों से कश्यप के सिर, हाथ और पैरों पर ताबड़तोड़ वार किए और जान से मारने की धमकी देते हुए फरार हो गए। लहूलुहान

हालत में नेता को अस्पताल पहुंचाया गया। उनके बेटे शिशिर कश्यप की रिपोर्ट पर तारबहार पुलिस ने हत्या के प्रयास का मामला दर्ज किया। जांच के दौरान घटनास्थल और आसपास के सीसीटीवी फुटेज खंगाले गए, जिसमें एक संदिग्ध बाइक (CG-31 C-1957) कैद हो गई। इसी बाइक के नंबर के आधार पर पुलिस की तफ्तीश पड़ोसी जिले जीपीएम के पटेराटोला (गौरेला) तक जा पहुंची।

5 लाख का लालच,दूर से मास्टरमाइंड ने इशारा किया : पुलिस ने पटेराटोला से संदेही नितिन टेकाम (21 वर्ष) और एक अपचारी बालक को हिरासत में लेकर जब कड़ाई से पूछताछ की, तो उन्होंने पूरा कच्चा-चिट्ठा खोल दिया। आरोपियों ने बताया कि गौरेला-पेंड्रा निवासी दीपक तिवारी ने बिलासपुर के एक रसूखदार व्यक्ति की हत्या करने के लिए उन्हें 5-5 लाख रुपए की सुपारी दी थी। तय योजना के तहत नितिन,साहिल सोनकर और नाबालिग उसी बाइक से बिलासपुर पहुंचे। वारदात के वक्त मास्टरमाइंड दीपक तिवारी भी रेलवे अस्पताल के आसपास ही छिपकर खड़ा था। जैसे ही श्याम कश्यप मॉर्निंग वॉक करते हुए वहां पहुंचे,दीपक ने दूर से इशारा करते हुए अपने गुर्गों से कहा-यही है टारगेट,जिसका काम तमाम करना है। इशारा मिलते ही हमलावरों ने डंडों से नेता पर हमला बोल दिया।

पुलिस अब ममास्टरमाइंड की तलाश में : तारबहार पुलिस ने आरोपी नितिन टेकाम और नाबालिग को गिरफ्तार कर लिया है। उनके कब्जे से वारदात में इस्तेमाल की गई बाइक,डंडा और एक मोबाइल फोन जब्त किया गया है। फिलहाल पुलिस की टीमें फरार मास्टरमाइंड दीपक तिवारी और तीसरे हमलावर साहिल सोनकर की सरगर्मी से तलाश कर रही हैं।

बेटे ने हथिया लिया था,बुजुर्ग मां को वापस मिलेगा अपना मकान

बिलासपुर,19 जुलाई 2026। छत्तीसगढ़ हाईकोर्ट ने वरिष्ठ नागरिकों के अधिकारों से जुड़े एक महत्वपूर्ण मामले में साफ किया है कि माता-पिता और वरिष्ठ नागरिकों का भरण-पोषण एवं कल्याण अधिनियम-2007 के तहत गठित मेंटेनेंस ट्रिब्यूनल (अतिरिक्त कलेक्टर) को जरूरत पड़ने पर बुजुर्गों की सुरक्षा के लिए उनके ही घर से बेटे या रिश्तेदार को बेदखल करने का अधिकार है। अदालत ने कहा कि यह कानून सिर्फ भरण-पोषण दिलाने के लिए नहीं,बल्कि बुजुर्गों को सुरक्षित और सम्मान के साथ रहने का अधिकार दिलाने के लिए बनाया गया है जस्टिस अमितेंद्र किशोर प्रसाद की एकलपीठ ने रायगढ़ जिले के रामदयाल साहू की याचिका खारिज करते हुए मेंटेनेंस ट्रिब्यूनल (अतिरिक्त कलेक्टर) और अपीलीय प्राधिकरण के आदेश को सही ठहराया। रायगढ़ जिले के ग्राम कंचनपुर,तहसील घरघोड़ा निवासी रामदयाल साहू ने हाई कोर्ट में याचिका दायर कर उस आदेश को चुनौती दी थी,जिसमें उन्हें अपनी मां हेमकुंवर के नाम पर बने मकान का कब्जा वापस करने और घर खाली करने के निर्देश दिए गए थे। रिकार्ड के अनुसार हेमकुंवर के नाम खसरा नंबर 321/46, रकबा 299 वर्गमीटर की आबादी भूमि का पट्टा है। इसी जमीन पर प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत उनके नाम से मकान बनाया गया था। जांच में पाया गया कि उस मकान पर रामदयाल साहू का कब्जा था। जांच रिपोर्ट के आधार पर मेंटेनेंस ट्रिब्यूनल ने 12 नवंबर 2021 को आदेश देकर बुजुर्ग मां हेमकुंवर को

मकान का कब्जा वापस दिलाने के निर्देश दिए थे। यह आदेश लागू नहीं होने पर उन्होंने दोबारा मेंटेनेंस ट्रिब्यूनल का दरवाजा खटखटाया। इसके बाद ट्रिब्यूनल ने 15 मई 2024 को फिर आदेश जारी कर 2021 के आदेश को लागू करने और मकान का कब्जा हेमकुंवर को दिलाने के निर्देश दिए। इसके खिलाफ रामदयाल साहू ने अपील की, लेकिन 7 अगस्त 2024 को अपीलीय प्राधिकरण ने ट्रिब्यूनल का आदेश बरकरार रखा। साथ ही रामदयाल साहू और उनके दो भाइयों को अपनी मां को 1,500-1,500 रुपये प्रतिमाह भरण-पोषण देने का भी आदेश दिया। इस आदेश को रामदयाल साहू ने हाई कोर्ट में चुनौती दी थी। उसने कोर्ट में कहा कि संपत्ति पैतृक है और उसके बंटवारे तथा स्वामित्व को लेकर सिविल सूट पहले से लंबित है। इसलिए ट्रिब्यूनल को बेदखली का आदेश देने का अधिकार नहीं था।

बीमा क्लेम के नाम पर कमीशनखोरी पूर्व टीआई गिरफ्तार,भेजे गए जेल एक वकील पर भी है एफआईआर

नारायणपुर,19 जुलाई 2026। नारायणपुर जिले में पुलिस विभाग से जुड़ा बड़ा मामला सामने आया है। सैलरी पैकेज इंश्योरेंस क्लेम दिलाने के नाम पर कमीशन मांगने के आरोप में नारायणपुर के पूर्व थाना प्रभारी निरीक्षक सुरेश चंद यादव को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया है। मामले में एक अधिवक्ता को भी आरोपी बनाया गया है। इस मामले में शिकायतकर्ता ने आरोप लगाया था कि बीमा राशि का क्लेम दिलाने के एवज में तत्कालीन नगर निरीक्षक सुरेश चंद यादव ने कमीशन की मांग की थी। शिकायत मिलने के बाद जिले के नए एसपी संदीप पटेल ने मामले को गंभीरता से लेते हुए कार्रवाई का निर्देश दिया। जिसके कोतवाली पुलिस ने धोखाधड़ी समेत अन्य धाराओं में एफआईआर दर्ज कर जांच शुरू की। विवेचना के दौरान प्रथम दृष्टया पर्याप्त साक्ष्य मिलने पर पुलिस ने पूर्व टीआई को गिरफ्तार कर न्यायिक अभिरक्षा में जेल भेज दिया। जांच में एक अधिवक्ता की भूमिका भी सामने आने पर उसके खिलाफ भी एफआईआर दर्ज की गई है।

आरक्षक की मौत मामले में टीआई फाइल समेत तलब,7 महीने बाद फिर जांच शुरू

बालोद,19 जुलाई 2026। जिले में सात महीने पहले संदिग्ध परिस्थितियों में हुई आरक्षक लिकेश पटेल की मौत का मामला एक बार फिर सुर्खियों में आ गया है। घटना के लंबे समय बाद भी मौत के कारणों का खुलासा नहीं होने पर पुलिस अधीक्षक कार्यालय ने मामले को गंभीरता से लेते हुए थाना प्रभारी बालोद से विस्तृत प्रतिवेदन तलब किया है। मिली जानकारी के अनुसार, 1 जनवरी 2026 को बालोद थाना क्षेत्र के ग्राम टेकापार के पास एक खेत में आरक्षक लिकेश पटेल का शव संदिग्ध परिस्थितियों में मिला था। उस समय वे मोहला-मानपुर-अंबागढ़ चौकी जिले में पदस्थ थे। घटना के बाद पुलिस ने विभिन्न पहलुओं से जांच शुरू की थी, लेकिन सात महीने बीत जाने के बावजूद मौत के कारणों का आधिकारिक खुलासा नहीं हो सका।

रायपुर के बिजनेसमैन महेंद्र गोयनका दिल्ली में अरेस्ट

फेक डॉक्यूमेंट्स से बीजेपी विधायक की कंपनियों पर किया कब्जा,1000 करोड़ के फ्रॉड का आरोप

बिलासपुर,19 जुलाई 2026। रायपुर के बिजनेसमैन महेंद्र गोयनका 1000 करोड़ रुपए की धोखाधड़ी के मामले में अरेस्ट हुए हैं। कोलकाता पुलिस ने उन्हें दिल्ली से पकड़ा और कोर्ट में पेश करने के बाद 10 दिन की रिमांड पर लिया है। यह मामला मध्यप्रदेश के कटनी जिले के विजयराघवगढ़ से भाजपा विधायक संजय पाठक के परिवार की कंपनियों से जुड़ा है। आरोप है कि रायपुर निवासी महेंद्र गोयनका ने फर्जी दस्तावेजों और हस्ताक्षरों के जरिए पाठक परिवार की कई कंपनियों पर कब्जा हासिल करने की कोशिश की। करीब 1000 करोड़ रुपए की धोखाधड़ी की। पुलिस के मुताबिक, गोयनका पहले पाठक परिवार की कंपनी यूरो प्रतीक इस्पात इंडिया प्राइवेट लिमिटेड में प्रबंधन से जुड़े पद पर कार्यरत था। आरोप है कि इसी दौरान उसने वित्तीय अनियमितताएं कीं और कंपनी का माल बेचकर बड़े पैमाने पर गबन किया।

कोलकाता पुलिस ने इस मामले में आईपीसी की धारा 420, 120-बी, 467, 468 और 471 के तहत एफआईआर दर्ज कर कार्रवाई की है। महेंद्र गोयनका और उसके सहयोगियों के खिलाफ मध्य प्रदेश के कटनी में भी जालसाजी के दो मामले दर्ज हैं। सहयोगी निदेशकों की अग्रिम जमानत याचिकाएं सुप्रीम कोर्ट से खारिज हो चुकी हैं। पुलिस के अनुसार,इनमें से कुछ आरोपी लंबे समय से फरार हैं। 9 मई 2025 को राष्ट्रीय कंपनी विधि न्यायाधिकरण की मुंबई पीठ ने एक आदेश में महेंद्र गोयनका और उनकी पत्नी मीनू गोयनका से जुड़े वित्तीय गबन के आरोपों पर सख्त टिप्पणियां की थीं। इसके अलावा गोयनका की एक अन्य कंपनी निसर्ग इस्पात से जुड़े वित्तीय अनियमितताओं के मामले भी जांच के दायरे में रहे हैं। संजय पाठक के परिवार की कंपनी यूरो प्रतीक का मुख्यालय कोलकाता में है। महेंद्र गोयनका इस कंपनी के मैनेजमेंट में बड़े पद पर था। महेंद्र पर आरोप है कि उसने अपनी पत्नी के साथ मिलकर कंपनी के दो डायरेक्टर्स को हटाकर 4 अन्य लोगों को डायरेक्टर बना दिया था। इस मामले में कोलकाता में उसके खिलाफ 2024 में एफआईआर दर्ज की गई थी।

फर्जी पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट बनाने वाली महिला डॉक्टर गिरफ्तार

बिलासपुर,19 जुलाई 2026। छत्तीसगढ़ के बिलासपुर में स्नेक बाइट से फर्जी मौत दिखाकर मुआवजा दिलाने के बहुचर्चित मामले में पुलिस ने सिम्स में पदस्थ रहीं महिला डॉक्टर डॉ. प्रियंका सोनी को गिरफ्तार किया है। आरोप है कि उन्होंने दो मामलों में स्नेक बाइट से मौत की फर्जी पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट तैयार की थी। मामला तोरवा थाना क्षेत्र का है। पुलिस के अनुसार, तहसील कार्यालय के नायब नाजीर की शिकायत पर महमंद निवासी निसार खान और लता सूर्यवंशी की संदिग्ध मौत के मामलों में केस दर्ज कर जांच शुरू की गई थी। जांच में सामने आया कि दोनों शवों का पोस्टमार्टम तत्कालीन सिम्स चिकित्सक डॉ. प्रियंका सोनी ने किया था और स्नेक बाइट से मौत होने की फर्जी रिपोर्ट तैयार की गई थी। इसी आधार पर पुलिस ने 18 जुलाई को फरार चल रही डॉक्टर को गिरफ्तार कर कोर्ट में पेश किया, जहां से उन्हें जेल भेज दिया गया। बता दें कि इससे पहले इस मामले में दो मृतकों के रिश्तेदार और एक वकील समेत तीन आरोपियों को गिरफ्तार कर जेल भेजा जा चुका है।

पांच लोगों की मौत की विशेष जांच दल करेगी जांच,आर्थिक तनाव और नशे के एंगल की भी पड़ताल

रायपुर,19 जुलाई 2026। राजधानी के संजय नगर में एक ही परिवार के पांच लोगों की संदिग्ध मौत के मामले की जांच अब विशेष जांच दल करेगा। पुलिस ने मामले की गंभीरता को देखते हुए एसीपी देवांश राठौर के नेतृत्व में आठ सदस्यीय टीम गठित की है, जो घटना से जुड़े हर पहलू की गहन जांच करेगी। प्रारंभिक जांच के अनुसार बैटरी कारोबारी साजिद अली, उसकी पत्नी राबिया बानो, बेटे इरशाद और दो बेटियों के शव शुक्रवार रात उनके घर से बरामद हुए थे। शुरुआती आशंका है कि

साजिद ने पहले परिवार के चार सदस्यों को जहरीला पदार्थ खिलाया और बाद में खुद फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। पुलिस का कहना है कि मौत की वास्तविक वजह फोरेंसिक जांच और पोस्टमॉर्टम की विस्तृत रिपोर्ट आने के बाद ही स्पष्ट होगी। जांच में सामने आया है कि गुरुवार देर रात करीब 12:30 बजे साजिद ने अपने बेटे इरशाद को फोन कर तुरंत घर बुलाया था। बताया जा रहा है कि उसने बेटे को डांटते हुए घर आने के लिए कहा। इसके बाद वह बाजार से रसगुल्ले और पेड़ा लेकर आया और परिवार के साथ मिठाई खाई गई। इसके बाद साजिद के अलावा परिवार का कोई भी सदस्य घर से बाहर नहीं निकला। स्थानीय लोगों और सीसीटीवी फुटेज के मुताबिक शुक्रवार सुबह करीब नौ बजे साजिद कुछ मिनट के लिए घर से बाहर निकला था। वॉशरूम जाने के बाद वह दोबारा घर के अंदर चला गया और फिर बाहर नहीं आया। पुलिस इसी समय-क्रम को आधार बनाकर घटनाक्रम की कड़ियां जोड़ रही है। शनिवार शाम पोस्टमॉर्टम की प्रक्रिया पूरी होने के बाद सभी शव परिजनों को सौंप दिए गए। देर रात करीब नौ बजे परिवार के पांचों सदस्यों का एक साथ अंतिम संस्कार किया गया। पुलिस जांच में पता चला है कि घटना से एक दिन पहले तक परिवार की गतिविधियां सामान्य थीं। गुरुवार दोपहर साजिद की पत्नी राबिया बानो मोहल्ले के एक दर्जी के यहां कपड़ों का नाप देने गई थीं और रविवार तक कपड़े तैयार करने को कहा था। वहीं दोनों बेटियां भी शाम के समय किराएदार के घर गई थीं और बाद में वापस लौट आई थीं। जांच में अब तक परिवार के अन्य सदस्यों के व्यवहार में किसी असामान्य स्थिति के संकेत नहीं मिले हैं। पुलिस के अनुसार साजिद अली मौदहापारा क्षेत्र में बैटरी रिपेयरिंग का कारोबार करता था।

प्रकाशक,मुद्रक,स्वामी अविनाश कुमार सिंह के द्वारा सांई ऑफ्सेट प्रिंटर्स,नमनाकला,संत हरकेवल विद्यापीठ के पास,अम्बिकापुर से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-अविनाश कुमार सिंह* (पी.आर.बी.कानून के अनुसार संपूर्ण संपादकीय दायित्व के लिए जिम्मेदार)
RNI Reg.No.CHHHIN/2004/15050,डॉक रजिस्टर्ड क्र.:-13/सरगुजा/डीएन/2026-2028-मो. 94062-23001,98265-32611,Email:ghatatighatana11@ gmail.com,Website:www.ghatatighatana.com, (सभी विवादों का न्याय क्षेत्र अम्बिकापुर न्यायालय मान्य होगा)